डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल/162/2018–20
पोस्टिंग दिनाँक : 15 फरवरी 2020, पृष्ठ सं. 40
प्रकाशन दिनाँक: 15 फरवरी 2020

आर.एन.आई.पं.क्र. MP HIN/2004/12178

ISSN 2319-3107

मूल्य ₹ 25/-

आंचलिक पत्रकार

454

सितंबर, 1981 से प्रकाशित

हम प्रकृति के वरदानों का उपयोग तो कर सकते हैं किन्तु हमें उनको मारने का अधिकार नहीं है। नैसर्गिक पदार्थों का अतिदोहन जो लालच तथा ज्यादा लाभ के लिए किया जाता है वह जैव मण्डल को नुकसान पहुँचाता है।

महात्मा गांधी का प्रकृति चिन्तन

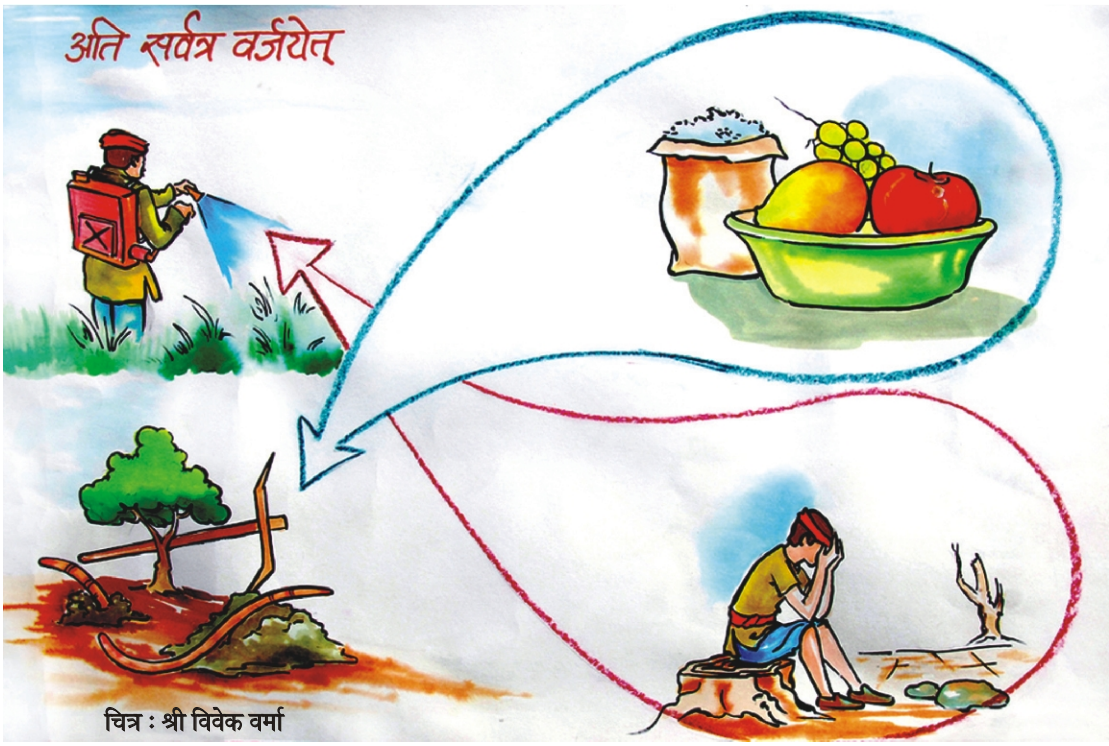

चित्र : श्री विवेक वर्मा

- ग्राम उद्योग को प्रोत्साहन
- औद्योगिकीकरण एक अभिशाप
- आर्थिक समानता
- अहिंसा तथा जीवों के प्रति सम्वेदना
- स्वच्छता

सप्रे संग्रहालय
या विद्या या विमुक्तये

पत्रकारिता, जनसंचार और विज्ञान संचार की शोध पत्रिका

http://www.anchalikpatrakar.com

कर्मवीर के सौ साल

मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ ने 'कर्मवीर के सौ साल' संदर्भ ग्रन्थ का विमोचन किया। साथ में हैं श्री सुरेश पचौरी एवं श्री पी.सी. शर्मा।

वरिष्ठ राजनेता श्री दिग्विजय सिंह ने 'कर्मवीर' के शताब्दी विशेषांक का विमोचन किया

ISSN 2319–3107

सितंबर, 1981 से प्रकाशित

फरवरी – 2020

वर्ष–39, अंक–6, पूर्णांक–454

एक प्रति ₹ 25/– वार्षिक ₹ 250/–

आंचलिक पत्रकार

पत्रकारिता, जनसंचार और विज्ञान संचार की शोध पत्रिका

अनुक्रम

1.	कर्मवीर के सौ साल	रपट – युगेश शर्मा	4
2.	महात्मा गांधी का प्रकृति चिंतन	कृष्ण गोपाल व्यास	21
3.	जनपद–आंदोलन : साहित्य में जनतंत्र का स्वर		24
4.	वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली	डा. दिनेश मणि	26
5.	यादों की आकाशगंगा में 'पंडित जी'	रमेश नैयर	29
6.	हिन्दी प्रकाशन के पुरोधा श्री श्यामसुंदर		33
7.	खबर खबरवालों की	संजय द्विवेदी	36

"

- जीवन सब कलाओं से ऊपर है और मैं यह भी घोषित करता हूँ कि जो व्यक्ति जीवन में पूर्णता लाने का प्रयास करता है वहएक महान कलाकार है।
- भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई भूल को स्वीकार कर लेना एवं वैसी भूल फिर न करने का प्रयास करना वीर एवं शूर होने का प्रतीक है।

– **महात्मा गांधी** "

E-mail
sapresangrahalaya@yahoo.com
editor.anchalikpatrakar@gmail.com
☎ (0755) 2763406, मोबा. 9425011467
7999460151 https://www.facebook.com/vijaydutt.shridhar.9

संपादकीय पत्र व्यवहार
संपादक, 'आंचलिक पत्रकार'
माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान
मेन रोड नं. 3, भोपाल (म.प्र.) 462003

कर्मवीर के सौ साल

रपट : युगेश शर्मा

कर्मवीर सम्मान : गांधी-मार्ग के अनुगामी डा. राकेश कुमार पालीवाल

पत्रकारिता के आदर्श-मूल्यों की स्थापना करने और आजादी की अलख जगाने वाले समाचार एवं विचार पत्र 'कर्मवीर' के प्रकाशन के सौ वर्ष पूरे होने पर माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, 'कर्मवीर' और गौरव मेमोरियल फाउण्डेशन ने शताब्दी समारोह का आयोजन 24 जनवरी को किया। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह मुख्य अतिथि थे। जनसंपर्क एवं विधि मंत्री पी.सी. शर्मा ने अध्यक्षता की। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलपति दीपक तिवारी विशिष्ट अतिथि थे।

समारोह के प्रारंभ में तीनों मंचासीन अतिथियों ने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और 'कर्मवीर' के यशस्वी संस्थापक-संपादक श्री माखनलाल चतुर्वेदी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। 150वें जन्म वर्ष के प्रसंग में बा और बापू और महान पत्रकार एवं साहित्य मनीषी कर्मयोगी माधवराव सप्रे को भी श्रद्धापूर्वक याद किया गया। समारोह का प्रारंभ गाँधीजी के प्रिय भजन ''वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे'' से हुआ। तत्पश्चात शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र और चरखा भेंट कर गाँधीजी के विचारों को रचनात्मक प्रयासों से मूर्तरूप देने वाले डा. राकेश कुमार पालीवाल, जैव विविधता और लोकभाषा के उन्नयन के लिए समर्पित पद्मश्री विभूषित बाबूलाल दाहिया, गांधीजी के बताए मार्ग पर चलने वाले समाजसेवी श्री शंकरभाई

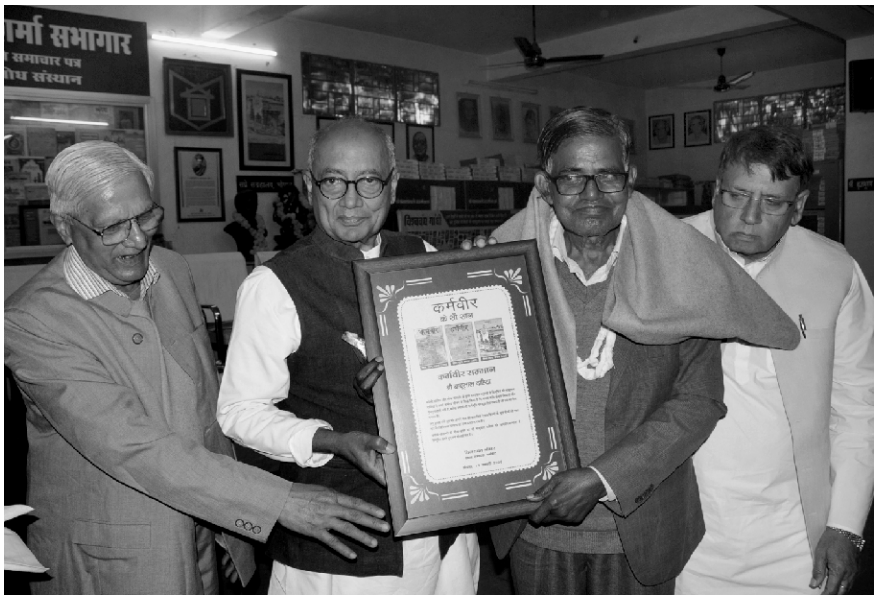

कर्मवीर सम्मान : जैव विविधता के संरक्षक श्री बाबूलाल दाहिया

ठक्कर और अनन्य हिन्दीसेवी श्री कैलाशचन्द्र पन्त को 'कर्मवीर सम्मान' से सम्मानित किया गया। संग्रहालय की संचालन परिषद के सदस्य डा. राकेश पाठक ने सम्मानित विभूतियों की प्रशस्ति का वाचन किया। संस्कृति-समीक्षक पत्रकार विनय उपाध्याय ने समारोह का संचालन किया। इस अवसर पर सप्रे संग्रहालय की ओर से गांधी भवन न्यास के सचिव श्री दयाराम नामदेव ने शॉल, सूतमाला और संग्रहालय का साहित्य एवं चरखा भेंट कर श्री दिग्विजय सिंह का सम्मान किया। इसके अलावा, विशेष रूप से सप्रे संग्रहालय परिवार से जुड़ने वाली प्रखर पत्रकार श्रीमती अमृता सिंह का संग्रहालय की निदेशक डा. मंगला अनुजा ने पुष्पमाला से स्वागत किया। सौ साल पूरे होने पर 'कर्मवीर' के विशेषांक का मुख्य अतिथि श्री दिग्विजय सिंह एवं समारोह के अध्यक्ष श्री पी.सी. शर्मा ने विमोचन किया। 'कर्मवीर' के संपादक श्री विवेक श्रीधर ने विशेषांक के विमोचन के लिए प्रस्तुत किया। समारोह में राष्ट्रकवि श्री माखनलाल चतुर्वेदी के वंशज और 'मध्यप्रदेश संदेश' एवं 'रोजगार और निर्माण' के पूर्व संपादक, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के पूर्व महानिदेशक श्री अरविन्द चतुर्वेदी की विशेष उपस्थिति का ससम्मान उल्लेख किया गया।

अब पहले जैसी निर्भीक पत्रकारिता नहीं : दिग्विजय

मुख्य अतिथि श्री दिग्विजय सिंह ने पत्रकारिता के गौरव पुरुष श्री माखनलाल चतुर्वेदी, श्री गणेशशंकर विद्यार्थी और श्री माधवराव सप्रे को श्रद्धापूर्वक स्मरण किया। आपने पत्रकारिता, स्वतंत्रता संग्राम और आज के हालात को केन्द्र में रखकर अपने विचार रखे। आपने कहा – वाकई श्रीधरजी ने कठिनाइयों से गुजरते हुए सप्रे संग्रहालय को खड़ा किया है। प्रसन्नता की बात है कि हम लोग इसी संग्रहालय में माखनलाल जी द्वारा प्रारंभ किए गए 'कर्मवीर' के सौ साल पूरे होने का समारोह मना रहे हैं। जब 'कर्मवीर' का प्रकाशन शुरू हुआ था-उस समय की

कर्मवीर सम्मान : संस्कारधानी के सेतुबंधु श्री शंकरभाई ठक्कर

परिस्थितियों को याद करते हैं, तो यह बात सामने आती है कि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद देश में फिरकापरस्ती ने सिर उठाया था। हमारी अनेकता में जो एकता थी, उसको बाँटकर अँगरेज अपना राज कायम रखना चाहते थे। आजादी की लड़ाई में सभी धर्मों के लोग एक साथ शामिल हुए थे। शुरुआत में ज्यादातर वकील आजादी के आंदोलन से जुड़े थे। गाँधीजी ने आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाया था। उन्होंने देशवासियों से कहा था कि आजादी चाहिए, तो जूझना पड़ेगा। गाँधीजी ने सद्भाव, सत्य और अहिंसा का रास्ता बताया और उसकी बुनियाद पर आजादी की लड़ाई लड़ी गई और देश को आजादी मिली। वे आपस में नफरत पैदा करने के सख्त खिलाफ थे क्योंकि नफरत ऐसी प्रवृत्ति है, जो समाज को तोड़ती है। एक बार मैं समाज सेवी बाबा आमटे से मिलने गया था। बातचीत के दौरान उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात कही थी कि प्रतिस्पर्धा नफरत को जन्म देती है। हमें दूसरों की बजाय स्वयं से प्रतिस्पर्धा करना चाहिए। नफरत पारस्परिक समझ और सद्भावना को समाप्त करती है। बुद्ध और गाँधी ने हमें सही राह बतायी है कि अपने आपको सुधारो। खेद की बात है कि हम खुद पर ध्यान नहीं देते और दूसरों की कमियों और बुराइयों को देखते हैं। यह बहुत-सी समस्याओं की जड़ है।

श्री सिंह ने कहा - आज की पत्रकारिता जिस रास्ते पर जा रही है उससे स्वार्थ की पूर्ति तो हो सकती है लेकिन उससे पत्रकारिता में निर्भीकता नहीं आएगी। माखनलाल चतुर्वेदी, माधवराव सप्रे और गणेशशंकर विद्यार्थी ने निर्भीक पत्रकारिता की थी। तब ही वे देश के लिए पत्रकारिता के जरिये बड़ा काम कर पाए थे। ब्रिटिश सत्ता से मुक्ति में भी उनका विशेष योगदान रहा है। आज यह भावना हमें पत्रकारिता में दिखाई नहीं दे रही है। आज देश में कटुता पैदा कर समाज को तोड़ने की कोशिशें हो रही हैं। सामाजिक तनाव के कारण हमारी अर्थव्यवस्था बिगड़ रही है। इस समय पत्रकारिता की बहुत बड़ी भूमिका होनी चाहिए, लेकिन वह खुलकर सामने नहीं आ रही है। यह गंभीर चिंता की बात है। पत्रकारिता को उसकी सही भूमिका की याद दिलाने और उसकी ओर चलने के लिए प्रेरित करने में सप्रे संग्रहालय एवं

कर्मवीर सम्मान : अनन्य हिन्दी सेवी श्री कैलाशचन्द्र पन्त

श्रीधर जी बड़ा काम कर रहे हैं। मैं उन्हें बधाई देता हूँ। सचमुच श्रीधरजी का काम अद्‌भुत है। संग्रहालय में पत्रकारिता से संबंधित जो भी ज्ञान-संपदा है, उसका डिजिटाइजेशन तो होना ही चाहिए। दुर्लभ किताबों, पत्रिकाओं और अखबारों आदि को समय के प्रभाव से बचाकर सुरक्षित रखने के लिए यह बहुत जरूरी है। राज्य सरकार और केन्द्र सरकार की ओर से इस कार्य के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधन दिलवाने के लिए मैं भी अपने स्तर पर प्रयास करूँगा। पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल को इस काम का एक प्रोजेक्ट के रूप में लेकर पूरा कराने के लिए आगे आना चाहिए, क्योंकि उससे पत्रकारिता की आने वाली पीढ़ियों को ही लाभान्वित होना है।

प्रजातंत्र, राष्ट्रीय नेतृत्व, राजनीति और राजनीतिक दलों से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। एक बार विश्वास खो जाता है, तो वह आसानी से वापस नहीं लौटता। आज जैसी विश्वास में कमी पहले कभी नहीं आई थी। इन दिनों देश भर में आंदोलन हो रहे हैं। राजनीति, नेताओं और दलों के हाथ से निकलती जा रही है। अब वह उन हाथों में जा रही है जो नफरत और हिंसा में विश्वास करते हैं। जो नफरत और हिंसा से आजादी चाहते हैं, उन्हें राष्ट्रद्रोही बताया जा रहा है। महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष में यह हो रहा है, यह गंभीर चिंता का विषय है। गाँधीजी ने जिन बुराइयों को मिटाने की बात कही, उनको बढ़ावा दिया जा रहा है। हमें अपने पुराने इतिहास को फिर पढ़ना होगा और सोशल मीडिया के भटकाव से स्वयं को बचाना होगा। सोशल मीडिया का रास्ता अशांति की ओर जा रहा है – विकास की ओर नहीं। अब सोशल मीडिया के वश की बात नहीं रह गई है कि वह हिंसा, नफरत और आतंक के हालात को रोक सके। हमें अपने विद्यार्थियों के बीच जाकर सही मार्ग दिखाना होगा। उन्हें समझाना होगा कि देश के और उनके हित में क्या है। यह सही है कि तेजी से हालात बिगड़ रहे हैं। नहीं सँभाले गए, तो कहना कठिन है कि हम कहाँ जाकर रुकेंगे।

आज आई.आर.एस. सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्री पालीवाल को 'कर्मवीर सम्मान' से सम्मानित किया गया है। प्रसन्नता की बात है कि

हमारे देश में ऐसे अधिकारी भी हैं, जो भावनात्मक रूप से गाँधी-विचारों और मूल्यों के साथ जुड़े हुए हैं। वे गए तो दर्शनीय स्थल देखने थे, लेकिन गरीब आदिवासियों की भलाई के काम में लग गए। वे आदिवासियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए छेड़का गाँव में रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। श्री बाबूलाल दाहिया देशी धान की प्रजातियों को लोकप्रिय बनाने के काम में लगे हुए हैं। अब पुरानी प्रजातियाँ समाप्त होती जा रही हैं। मैं जब राज्य में कृषि मंत्री था, तब मैंने रासायनिक खेती को हतोत्साहित कर आर्गेनिक खेती पर जोर दिया था। श्री दाहिया यही काम कर रहे हैं। प्रकृति ने हमें जो दिया है, हम उसीको बचा लें, तो बड़ा काम हो सकता है। हम भूजल का जरूरत से ज्यादा दोहन कर रहे हैं। हजारों लाखों वर्षों में जो पानी धरती के भीतर जमा हुआ था-उसको निकाल रहे हैं। जहाँ भी हम प्रकृति के खिलाफ गए हैं, वहाँ हमको भुगतना पड़ा है। प्रकृति के साथ जब ऐसा बर्ताव होगा, तो सभ्यता के लुप्त होने का खतरा पैदा हो जाएगा।

अब मैं मूल बात करूँ। कर्मवीर के सौ साल पूरे होने का यह समारोह हो रहा है। भारत की संस्कृति और उसके इतिहास को देखें, तो यह बात सामने आएगी कि हमने अपने चरित्र में सादगी, सद्भाव और अहिंसा को प्रमुखता से स्थान दिया है। समाज में शांति की स्थापना हमारा मूल ध्येय रहा है। प्रकृति के साथ हमने हमेशा न्याय किया है। हम प्रकृति की रक्षा और उसके संरक्षण को अपनी जीवन शैली में अपनाएँ और उसको अपनी जीविका के साथ भी जोड़ें।

महात्मा गाँधी के 'हिन्द स्वराज' को जिन्होंने नहीं पढ़ा है, वे उसको अवश्य पढ़ें। भारत को गाँधी के तरीके से आगे ले जाना है, तो 'हिन्द स्वराज' को अवश्य पढ़ना चाहिए। बापू के 150वें जन्म वर्ष के प्रसंग में तो उसको पढ़ने का और भी महत्व है।

रतोना आंदोलन के भी सौ साल हुए : श्री दीपक तिवारी

विशिष्ट अतिथि श्री दीपक तिवारी ने 'कर्मवीर सम्मान' से अलंकृत विभूतियों को बधाई देते हुए कहा कि पं. माखनलाल चतुर्वेदी और 'कर्मवीर' के रतोना आंदोलन के फलस्वरूप गाय के प्रति मुसलमानों में भी सम्मान और रक्षा का भाव जागा था। मुसलमानों ने वहाँ गाय को सम्मानित करते हुए सद्भावना और भाईचारे का एक अनुकरणीय इतिहास रचा था। वह आंदोलन साम्प्रदायिक सौहार्द्र की एक मिसाल है। उस आंदोलन को भी सौ वर्ष पूरे होने जा रहे हैं।

श्री बाबूलाल दाहिया

जैव विविधता के चलते-फिरते इनसाइक्लो-पीडिया के बतौर ख्यात श्री बाबूलाल दाहिया ने कहा - मैं लोकभाषा बघेली के लोक साहित्य की खोज, संकलन और प्रकाशन के क्षेत्र में काम कर रहा हूँ। यह काम करते-करते जैव विविधता के साथ जुड़ गया। हमारी खेती में लोक कहावतों और मुहावरों का प्रयोग होता रहा है। मैंने इनको संकलित किया है। मैंने महसूस किया कि धान की प्रजातियों को बचाया जाना चाहिए। मैं 7-8 एकड़ का छोटा किसान होते हुए भी इस काम में जुट गया। अब तक 100 से अधिक प्रजातियों को बचाने में सफल हुआ हूँ। हमारी ये प्रजातियाँ पानी भी बचाती हैं। मैंने सप्रे संग्रहालय के लिए पानी पर काम किया है।

डा. राकेश कुमार पालीवाल

गाँधीजी के विचारों को साकार रूप देने के लिए पिछले 30 साल से सक्रिय डा. राकेश कुमार पालीवाल ने कहा - मैंने संकल्प किया है कि मैं सेवानिवृत्त होने के पूर्व देश के चार अत्यंत पिछड़े गाँवों को आदर्श गाँधी ग्राम के रूप में विकसित करूँगा। भोपाल में पदस्थ रहते हुए होशंगाबाद

'कर्मवीर' के शताब्दी समारोह में सप्रे संग्रहालय भवन में पधारे प्रबुद्धजन

जिले के आदिवासी गाँव छेड़का में काम चल रहा है। इस काम में अन्य व्यक्तियों और चिकित्सकों की मदद भी ली जा रही है। तेलंगाना राज्य में एक और गाँव में काम प्रारंभ किया है। 'कर्मवीर सम्मान' प्राप्त करना मेरे लिए गौरव की बात है। यह सम्मान और बहुत कुछ करने के लिए प्रेरित करेगा। मैं यह सम्मान उन लोगों को समर्पित करता हूँ, जो छेड़का को आदर्श गाँधी ग्राम बनाने में भागीदारी कर रहे हैं। मैं वादा करता हूँ कि सेवानिवृत्ति के लिए जो डेढ़ साल शेष है, उसमें आदर्श गांधी ग्रामों की संख्या चार तक पहुँचा दूँगा। गाँधीजी अन्त्योदय चाहते थे और मैं भी इसी काम में लगा हुआ हूँ। मैं मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की सरकारों से आग्रह करता हूँ कि वे अपने राज्य के प्रत्येक जिले में गांधीजी से प्रेरित होकर छेड़का गाँव की तरह एक गाँव को आदर्श गाँधी ग्राम के बतौर विकसित करें।

कर्मवीर की महत्ता

पूर्व में 'कर्मवीर' के प्रधान संपादक एवं सप्रे संग्रहालय के संस्थापक-संयोजक विजयदत्त श्रीधर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा - प्रणम्य माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा प्रारंभ 'कर्मवीर' अखबार नहीं, एक प्रवृत्ति थी। माखनलाल जी की बाद की पीढ़ी के प्रथम पुरुष श्री अरविन्द चतुर्वेदी समारोह में मौजूद हैं। आदर्श पत्रकारिता कैसी होती है, यह माखनलाल जी ने 'कर्मवीर' के माध्यम से बताया है। वे अखबार की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए भी किसी के सामने नहीं झुके। अपनी ही शर्तों और अपने सिद्धांतों पर पत्रकारिता की। माखनलाल जी से गांधीजी को अगाध प्रेम था। राष्ट्रकवि का जन्म स्थान होने के कारण बापू बाबई भी पहुँचे थे।

सप्रे संग्रहालय की 35 साल की यात्रा का जिक्र करते हुए आपने कहा - आज सप्रे संग्रहालय जिस स्वरूप में खड़ा है, उसके निर्माण में श्री दिग्विजय सिंह का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भोपाल के कमला पार्क में 400 वर्गफीट के मकान से अपनी यात्रा प्रारंभ कर आज स्वयं के भवन में संचालित होने की स्थिति में पहुँचने में सबका सहयोग रहा है। इस समय संग्रहालय की संदर्भ सामग्री के डिजिटाइजेशन का प्रथम चरण चल रहा है। दो-तीन साल में पूरा होगा। देश भर के 1000 विद्या अनुरागी परिवार सप्रे संग्रहालय के साथ जुड़े हुए हैं। अंत में सप्रे संग्रहालय की निदेशक डा. मंगला अनुजा ने आभार प्रकट किया।

दुर्लभ ज्ञान-संपदा सँजोने वाला सप्रे संग्रहालय अद्वितीय : श्री कमलनाथ

माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय जैसा संग्रहालय विश्व में दूसरा नहीं है। इसमें हजारों अखबारों और दुर्लभ दस्तावेजों को सँजोया गया है। सप्रे संग्रहालय में और भी दुर्लभ ज्ञान-संपदा उपलब्ध है। नई टेक्नोलॉजी से जुड़े बिना इतना विशाल संग्रहालय खड़ा करना बड़ी चुनौती का काम है। संग्रहालय के काम को देखते हुए उसकी जरूरत की पूर्ति के लिए सरकार की तरफ से और मेरी ओर से जो भी आवश्यकता होगी, सप्रे संग्रहालय को मदद दी जाएगी। मैं चाहता हूँ कि इस संग्रहालय को शैक्षिक पर्यटन के आकर्षण का केन्द्र बनाया जाना चाहिए। ज्ञान से जुड़ी विभिन्न प्रकार की जो अनमोल और दुर्लभ संपदा इस संग्रहालय में है, वैसी अन्यत्र कहीं नहीं है। ये उद्‌गार 'कर्मवीर' शताब्दी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि के बतौर संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री कमलनाथ ने व्यक्त किए। समारोह पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरेश पचौरी की अध्यक्षता तथा जनसंपर्क एवं विधि मंत्री पी.सी. शर्मा के विशेष आतिथ्य में संपन्न हुआ।

प्रारंभ में मुख्य अतिथि, अध्यक्ष और विशेष अतिथि ने महात्मा गाँधी और राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण किया। तत्पश्चात संग्रहालय के संचालक मंडल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र हरदेनिया ने पुष्पगुच्छ से अतिथियों का स्वागत किया।

इसी प्रसंग में 'कर्मवीर' परिवार की ओर से श्री वैभव श्रीधर, श्री अंचल श्रीधर, श्री अक्षज श्रीधर और कु.अंशिता श्रीधर ने सूतमाला, शॉल, कर्मवीर संबंधी प्रकाशन और चरखा भेंट कर मुख्यमंत्री का सम्मान किया। मुख्यमंत्री ने

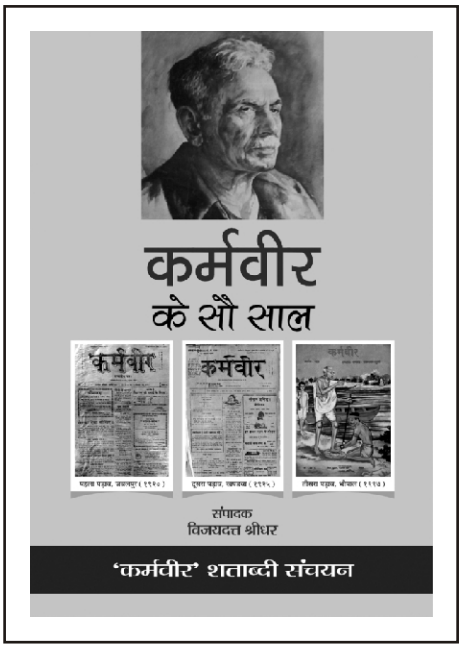

'कर्मवीर के सौ साल' संदर्भ ग्रंथ का विमोचन किया। कर्मवीर के संपादक श्री विवेक श्रीधर ने संदर्भ ग्रंथ विमोचन हेतु प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन संग्रहालय की निदेशक डा. मंगला अनुजा ने किया।

मुख्यमंत्री का उद्‌बोधन

मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ ने सर्वप्रथम 'कर्मवीर' परिवार और सप्रे संग्रहालय के संस्थापक-संयोजक विजयदत्त श्रीधर और संग्रहालय की ३५ साल की यात्रा से जुड़े सभी व्यक्तियों को बधाई दी। आपने कहा -आज देश के दो महापुरुषों - महात्मा गाँधी और श्री माखनलाल चतुर्वेदी की पुण्यतिथि है। माखनलाल चतुर्वेदी जी भी पूरे देश के थे। उन्होंने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में आजादी के लिए संघर्ष किया था। यह खुशी की बात है

'कर्मवीर के सौ साल' समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ

'कर्मवीर' 100 वर्ष पूरे कर चुका है। साथ ही महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष का प्रसंग भी आज के समारोह के साथ जुड़ा हुआ है। सप्रे संग्रहालय के बारे में आज मुझे पूरी जानकारी मिली। मुझे पहले ही यहाँ आना चाहिए था। इसके बारे में सोचना चाहिए था। यह ऐतिहासिक संग्रहालय है। माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कर्मवीर' के माध्यम से देश के नौजवानों को आजादी के लिए संघर्ष हेतु प्रेरित किया था। यह प्रसन्नता की बात है कि श्री विजयदत्त श्रीधर के प्रयासों से 'कर्मवीर' आज हमारे बीच है और अपने प्रकाशन के सौ वर्ष पूर्ण कर रहा है।

श्री कमलनाथ ने कहा कि आजकल महात्मा गाँधी के बारे में चाहे कुछ भी लिखा और कहा जा रहा हो, लेकिन ऐसा करने वाले शायद गाँधीजी को ठीक से समझ ही नहीं पाये हैं। महात्मा गाँधी अकेले भारत के नहीं हैं, वे तो सारे विश्व के हैं। मैं एक बार अफ्रीका गया था। वहाँ के राष्ट्रपति से भेंट का कार्यक्रम था। जिस कक्ष में भेंट हुई-उसमें महात्मा गाँधी और डा. बी.आर. अम्बेडकर के चित्र टँगे हुए थे। मैंने सोचा - शायद मुझे खुश करने के लिए ऐसा किया गया होगा। जब मैंने चित्रों के बारे में राष्ट्रपति से जानना चाहा तो उन्होंने कहा था - ''महात्मा गाँधी के विचारों ने हमको दिशा दी है। डा. अम्बेडकर ने नजरिया दिया है और हमें अपना संविधान बनाने में मदद भी की है।''

अब तो दुनिया महात्मा गाँधी के बताए मार्ग पर चलने के लिए प्रयत्नशील है। विश्व के लोग अनुभव कर रहे हैं कि गांधी ही दुनिया को शांति का रास्ता बता सकते हैं। अमेरिका - दक्षिण और उत्तर, अफ्रीका, यूरोप और एशिया को देखें, तो यह तथ्य सामने आता है कि सबसे अधिक आकर्षण महात्मा गाँधी की विचारधारा की ओर है। महात्मा गाँधी ही हैं, जो हिंसा और अशांति से मुक्ति का रास्ता बता सकते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा - आज महात्मा गाँधी को भुलाने की तरह-तरह की कोशिशें हो रही हैं। हमें इन कोशिशों की तरफ से सावधान रहना होगा। यह बात पक्की है कि गाँधीजी को भुलाने में कोई सफल नहीं होगा। वे तो समय के साथ भारत और दुनिया में और अधिक प्रासंगिक होते जाएँगे।

'कर्मवीर' परिवार की ओर से श्री वैभव श्रीधर, श्री अंचल श्रीधर, श्री अक्षज श्रीधर और कुमारी अंशिता श्रीधर ने मुख्यमंत्री का सम्मान किया।

जनसंपर्क मंत्री श्री पी.सी. शर्मा

विशेष अतिथि जनसंपर्क मंत्री श्री पी.सी. शर्मा ने कहा कि आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला 'कर्मवीर' अपनी-प्रकाशन यात्रा के 100 वर्ष पूरे कर रहा है। किसी प्रकाशन के जीवन की यह एक बड़ी घटना होती है। श्रीधरजी 'कर्मवीर' के प्रकाशन को निरंतर बनाए हुए हैं, यह स्वागत योग्य है। मैं माखनलाल चतुर्वेदी का पुण्य स्मरण करता हूँ। माखनलालजी तो महात्मा गाँधी के भक्त थे। यह संयोग की बात है कि इन दोनों महापुरुषों की पुण्यतिथि 30 जनवरी है।

सप्रे संग्रहालय मेरे विधानसभा क्षेत्र में स्थित है। मुझे इस बात की विशेष प्रसन्नता है कि मुख्यमंत्री जी इस संग्रहालय में पहली बार आए हैं। सप्रे संग्रहालय के शुरुआती दिनों की याद करता हूँ, तो बहुत से विचार मन में उठते हैं। संग्रहालय भोपाल के कमला पार्क में एक छोटे से कमरे में शुरू हुआ था, जो नगर निगम का था। मैं तब नगर निगम का पार्षद और आदरणीय पचौरीजी एल्डरमैन थे। संग्रहालय का वर्तमान समृद्ध स्वरूप देखकर गौरव की अनुभूति होती है। एक हजार से अधिक विद्यार्थी इस संग्रहालय की ज्ञान-संपदा की मदद से पीएच.डी. और डिग्रियाँ प्राप्त कर चुके हैं। पत्रकारिता की भी यह बहुत सेवा कर रहा है। मेरी कामना है कि यह संग्रहालय निरंतर प्रगति करे।

श्री सुरेश पचौरी

समारोह के अध्यक्ष श्री सुरेश पचौरी ने कहा कि अनूठा संयोग है कि महात्मा गाँधी और माखनलाल चतुर्वेदी, दोनों की एक साथ पुण्यतिथि है। वे दोनों महान आत्माएँ थीं। उन्होंने आजादी की लड़ाई भी साथ-साथ लड़ी थी। महात्मा गाँधी और माखनलालजी भारत की दो दैदीप्यमान विभूतियाँ हैं। महाकोशल का नाभि केन्द्र जबलपुर रहा है। यहीं से 1920 में 'कर्मवीर' का प्रकाशन शुरू हुआ था, जो 1925 में खंडवा होते हुए 1997 में भोपाल पहुँचा है।

जब 1933 में गाँधीजी बाबई पहुँचे थे, तब उन्होंने कहा था - मैं बाबई इस कारण आया हूँ कि यह माखनलालजी की जन्मभूमि है। मैं यहाँ आकर गौरव से भर गया हूँ।'' जहाँ तक सप्रे संग्रहालय

श्री अरविन्द श्रीधर ने मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ को 'अमृत-धरा अवंतिका' पुस्तक भेंट की

का प्रश्न है, यह प्रकाशनों और दस्तावेजों का एक अनूठा संग्रहालय है। मुझे याद आता है - 1996 में भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा सप्रे संग्रहालय में आए थे। तब संग्रहालय को देखकर उन्होंने कहा था - ''यह हिन्दुस्तान का अनूठा संग्रहालय है। यह पत्रकारिता के विकास के लिए बड़ा काम कर रहा है। इसको जितनी संभव हो सहायता दी जानी चाहिए।'' मुख्यमंत्रीजी अपनी व्यस्तताओं के बीच भी आज संग्रहालय में पधारे हैं। मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रस्तावना वक्तव्य : श्री विजयदत्त श्रीधर

'कर्मवीर' के प्रधान संपादक एवं सप्रे संग्रहालय के संस्थापक-संयोजक विजयदत्त श्रीधर ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, माखनलाल चतुर्वेदी तथा 'कर्मवीर' के ऐतिहासिक योगदान की विस्तार से चर्चा की। आपने कहा - आज का समारोह एक ऐतिहासिक कार्यक्रम है। मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ जी पहली बार सप्रे संग्रहालय मे´ पधारे हैं। कई विश्वविद्यालयों के वर्तमान और भूतपूर्व कुलपति, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार, भारतीय पुलिस सेवा के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी, और समाजसेवी आज के समारोह में शामिल हैं। हमारा सौभाग्य है कि गाँधीजी जैसा महापुरुष भारत में पैदा हुआ। दुनिया, महात्मा गाँधी के बारे में भारत से जानना चाहती है। दुनिया को विनाश से बचाने का रास्ता केवल गाँधी के पास है। माखनलाल चतुर्वेदी माधवराव सप्रे के शिष्य थे। उन्होंने ही उनको 'कर्मवीर' के संपादन का दायित्व सौंपा था। वे युवाओं की प्रतिभा के सच्चे पारखी थे। सप्रेजी ने ही पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र को भी पहचाना था। वे भी अपने समय के महान संपादक और कवि थे। इन्हीं माधवराव सप्रे जी के कृतित्व को प्रणाम करने के लिए हमने यह सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय बनाया है।

सप्रे संग्रहालय की भव्यता और ज्ञान-समृद्धि का अनुमान इन से लगाया जा सकता है कि हिन्दी, संस्कृत, मराठी, गुजराती, उर्दू और अँगरेजी के पाँच करोड़ पन्नों की ज्ञान-संपदा संग्रहालय में

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की जूनियर रिसर्च फेलोशिप परीक्षा में देश भर में प्रथम स्थान अर्जित करने वाले छात्र अभिराज सिंह राजपूत को मुख्यमंत्री ने प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

संग्रहालय में संग्रहीत है। 2000 दुर्लभ ग्रंथ भी यहाँ हैं। साधनों की कमी के बाद भी संग्रहालय में अपनी 35 वर्ष की यात्रा सफलता के साथ पूरी कर ली है। विभिन्न विषयों पर संग्रहालय की मदद से 1167 पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने अब तक पीएच.डी. की है। मुख्यमंत्री जी से हमारा आग्रह है कि सरकार संग्रहालय के संचालन के लिए पूरी मदद करे। संग्रहालय के कारण भारत ही नहीं, विदेशों में भी मध्यप्रदेश का नाम रोशन हो रहा है।

पत्रकारिता के छात्र अभिराज को प्रशस्ति पत्र भेंट

मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ ने इसी समारोह में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के छात्र श्री अभिराज सिंह राजपूत को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

श्री राजपूत ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की जूनियर रिसर्च फेलोशिप चयन परीक्षा में देश में सर्वोच्च स्थान अर्जित किया है। मुख्यमंत्री, जनसंपर्क मंत्री और श्री सुरेश पचौरी ने इस उपलब्धि पर पत्रकारिता के छात्र को बधाई और शुभकामनाएँ दीं।

अंत में, कर्मवीर परिवार और सप्रे संग्रहालय की ओर से श्री अरविन्द श्रीधर ने मुख्यमंत्री, पूर्व केन्द्रीय मंत्री जनसंपर्क मंत्री एवं अन्य सभी अतिथियों के प्रति आभार प्रगट किया। उन्होंने विशेष रूप से स्मरण किया कि पूज्य पिताश्री स्वतंत्रता सेनानी पं. सुन्दरलाल श्रीधर उस दौर में 'कर्मवीर' में लिखा करते थे।

'कर्मवीर' शताब्दी समारोह के दोनों सत्र में गरिमापूर्ण उपस्थिति रही। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति श्री दीपक तिवारी, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के पूर्व कुलपति डा. पी.के. मिश्र, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति डा. टी.आर. स्थापक के अतिरिक्त जिन महानुभावों की उपस्थिति विशिष्ट रही, वे हैं सर्वश्री किशनपन्त, रामेश्वर नीखरा, शंभुदयाल

जल विज्ञानी श्री कृष्णगोपाल व्यास ने मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ को मध्यप्रदेश में जल संरक्षण विषयक कार्ययोजना सौंपी।

गुरु, अरविन्द मालवीय, एन.के. सिंह, जगदीश कौशल, प्रोफेसर के.के. तिवारी, प्रोफेसर मधु गार्गव, लक्ष्मीनारायण पयोधि, भूपेश गुप्ता, वसंत निरगुणे, अशोक चतुर्वेदी, ध्रुव शुक्ल, चन्द्रकांत नायडू, डा. आर. रत्नेश, डा. शिवकुमार अवस्थी, शिव अनुराग पटेरिया, कमलेश पारे, डा. राकेश पाठक, आर.आर. सिंह, डा. एल.एस. यादव, आर.के. त्रिपाठी, डा. सुभाष अत्रे, उमेश त्रिवेदी, बाल मुकुन्द भारती, राकेश दुबे, राकेश दीक्षित, आनंद सिन्हा, प्रकाश साकल्ले, डा. एस.के. कुलश्रेष्ठ, डा. अरुण त्रिपाठी, कृष्ण गोपाल व्यास, दीपक पगारे, डा. जवाहर कर्नावट, डा. रामवल्लभ आचार्य, डा. हरप्रसाद शर्मा, महेन्द्र गगन, लाजपत आहूजा, डा. उमाशंकर नगायच, गिरीश उपाध्याय, श्रीमती विजया पाठक, श्रीमती त्रिवेदी, डा. क्षमा पांडेय, डा. ऋतु शर्मा तथा ममता यादव। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

● **रपट : युगेश शर्मा**

'कर्मवीर के सौ साल' समारोह में सप्रे संग्रहालय भवन में पधारे प्रबुद्धजन

पत्रकारिता में गांधी के सरोकारों की सर्वकालिक प्रासंगिकता

'कर्मवीर' के सौ साल पूरे होने पर माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय और गौरव मेमोरियल फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में 'गांधी के सरोकार और पत्रकारिता' संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शिक्षाविद डा. रामाश्रय रत्नेश की अध्यक्षता में आयोजित संगोष्ठी का संचालन 'कर्मवीर' न्यूज पोर्टल के संपादक डा. राकेश पाठक ने किया। संगोष्ठी में पत्रकारिता, साहित्य, शिक्षा, प्रशासन, संस्कृति और समाज सेवा क्षेत्र के प्रबुद्धजनों ने भागीदारी की। इस अवसर पर 'कर्मवीर' के प्रधान संपादक श्री विजयदत्त श्रीधर, संचालक मंडल के अध्यक्ष राजेन्द्र हरदेनिया, निदेशक डा. मंगला अनुजा और संचालक मंडल के सदस्य डा. शिवकुमार अवस्थी, चन्द्रकांत नायडू भी उपस्थित थे। करीब दो घंटे चले इस विमर्श का सामान्य निष्कर्ष यह रहा कि महात्मा गांधी और उनके समय की पत्रकारिता के समय जो परिस्थितियाँ थीं, वे अब बहुत बदल गई हैं। उस समय गाँधी के सरोकार और उस कालखंड की पत्रकारिता का मुख्य फोकस अँगरेजी सत्ता से मुक्ति और आजादी के संग्राम को सफल बनाने के लिए जन जागृति पर था। आजादी मिलने के बाद परिस्थितियों में काफी बदलाव आए हैं। ऐसी दशा में वर्तमान परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में पहल और प्रयास होना चाहिए। इस संबंध में जमीनी हकीकत को सामने रखकर सोचने और काम करने की आवश्यकता है। यह भी ध्यान में रखना होगा, कि आज की पत्रकारिता, जिसको अब मीडिया कहा जाने लगा है, सामान्यत: बाजारवाद और मुनाफे के साथ जुड़ गई है।

प्रोफेसर अरुण त्रिपाठी : संगोष्ठी शुरू करने के पूर्व पूर्वाह्न ठीक 11 बजे महात्मा गाँधी और श्री माखनलाल चतुर्वेदी की स्मृति में दो मिनट का मौन रखकर उन्हें और स्वतंत्रता संग्राम के सभी शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। प्रोफेसर अरुण त्रिपाठी ने विमर्श प्रारंभ करते हुए कहा – इन दिनों गाँधी को विचार रूप में मारने की कोशिशें हो रही हैं। किन्तु उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में इतनी अपरिमित सामर्थ्य है कि वे बार-बार जी उठते हैं। आज की पत्रकारिता को भी गाँधी की आवश्यकता है, क्योंकि उनके सरोकार आज भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए प्रासंगिक हैं। यह सही है कि आजादी के बाद के वर्षों में भारत में पत्रकारिता का कारोबार काफी बढ़ गया है। दूसरी तरफ कलम के अनियंत्रित प्रवाह के कारण कई समस्याएँ और चुनौतियाँ भी खड़ी हो गई हैं। ये अनियंत्रित प्रवाह पत्रकारिता का नाश कर रहे हैं। सत्ता के साथ जुड़कर जो पत्रकारिता आजकल होने लगी है, उसने अनपेक्षित हालात पैदा कर दिए हैं। पत्रकारिता की विश्वसनीयता कमजोर पड़ती जा रही है। मैं पत्रकारिता के अध्यापन से जुड़ा हुआ हूँ। गाँधी की पत्रकारिता में सत्य और उदारता के सरोकार शामिल थे। अब तो पत्रकारिता, पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों से हट रही है। पत्रकारिता की शिक्षा में गाँधीजी और माखनलाल चतुर्वेदी के पत्रकारिता के सिद्धांतों को भी विद्यार्थियों को पढ़ाया जाना चाहिए।

महात्मा गाँधी और माखनलालजी की पत्रकारिता राष्ट्रीयता के साथ-साथ सामाजिक परंपराओं के साथ भी संबंध स्थापित करती है। आज की आवश्यकता है कि महात्मा गाँधी और माखनलालजी की पत्रकारिता के सिद्धांतों का सूत्रीकरण हो। 'कर्मवीर' जिन छह सिद्धांतों पर प्रकाशित हो रहा था, उनको फिर से समझने की जरूरत है। दोनों पुरोधाओं की पत्रकारिता से सरोकारी पत्रकारिता के लिए नये सिद्धांतों के लिए कई सूत्र निकाल सकते हैं। अब विमर्श की गहराई में उतरने की आवश्यकता है। ऐसा होने पर ही पत्रकारिता का उद्धार होगा।

डा. जवाहर कर्नावट : विश्व के अन्य देशों में हिन्दी की पत्रकारिता पर शोधकर्ता डा. जवाहर कर्नावट ने अपने शोध से जुड़े अनुभवों और निष्कर्षों

को संगोष्ठी में साझा किया। आपने कहा–गाँधीजी ने इंडियन ओपीनियन, यंग इंडिया, नवजीवन और हरिजन नाम से पत्र निकाले थे। साउथ अफ्रीका में उन्होंने इंडियन ओपीनियन प्रकाशित किया था। वे अखबार में कोई भी विज्ञापन नहीं लेते थे। बिना विज्ञापन के इस अखबार की 1500 से 2000 प्रतियाँ छपा करती थीं। इसके 20 हजार से अधिक पाठक थे। जोहान्सबर्ग में अखबार नहीं पहुँच पाता था, तो लोग शिकायत करते थे। गुजराती संस्करण तो लोगों को पढ़कर सुनाया जाता था। अखबार में व्यापक कवरेज रहता था। गाँधी के लेख विश्व को प्रभावित करते थे। टालस्टाय के पत्र भी गाँधीजी ने अखबार में प्रकाशित किए थे। संयम रखकर पत्रकारिता कैसे की जा सकती है, यह हम गाँधीजी से सीख सकते हैं। गाँधीजी ने अपने पत्रों के माध्यम से पत्रकारिता के प्रतिमान स्थापित किए थे।

श्री चन्द्रकांत नायडू : वरिष्ठ पत्रकार श्री चन्द्रकांत नायडू ने कहा – गाँधीजी के लिए पत्रकारिता पेशा नहीं थी। वे तो इसको स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए एक हथियार के बतौर इस्तेमाल कर रहे थे। यह सही है कि वे ज्यादा मुखर व्यक्ति नहीं थे। फिर भी गाँधी जीनियस थे। वे पूर्ण रूप से पत्रकार बनने के लिए नहीं निकले थे। गाँधी ने जिस दौर में पत्रकारिता शुरू की थी – उस दौर में बहुत सी शक्तियाँ एक-दूसरे के विरुद्ध काम कर रही थीं। अब यह कहना अतिशयोक्ति-पूर्ण न होगा कि गाँधी को छोटा साबित कर ऐसे व्यक्तियों को महान साबित करने कोशिशें हो रही हैं, जो उनके सामने कहीं नहीं टिकते। नाथूराम गोडसे तक को भी महान बनाने की कोशिशें जारी हैं। कुछ लोग हैं, जो सामाजिक मूल्यों को बने नहीं रहना देना चाहते हैं।

आपने कहा कि गाँधी तो हर युग में हमारे साथ रहेंगे। अब तो सारी दुनिया गाँधी को समझने और उनके बताए रास्ते पर चलने का जतन कर रही है। ऐसी दशा में गाँधीजी को हमें नये तरीके से स्थापित करना होगा। पत्रकारों को भी इस दिशा में होने वाले प्रयासों के साथ जुड़ना होगा। इसी तरह गाँधीजी के खिलाफ जो अभियान चलाया जा रहा है, उसको विफल किया जा सकता है।

श्री शिवअनुराग पटेरिया : वरिष्ठ पत्रकार श्री शिवअनुराग पटेरिया ने कहा – सच तो यह है कि अब महात्मा गाँधी जन्मतिथि और पुण्यतिथि तक सीमित होकर रह गए हैं। इन दो दिनों में ही हम उनको याद करते हैं। उनके द्वारा जो कहा गया और किया गया, उसकी न हम चिंता कर रहे हैं और न उनकी बातों को मानते हैं। आज की पत्रकारिता की हालत बहुत खराब है। यदि कोई सिद्धांतवादी और साहसी पत्रकार सरकार के गलत कार्यों के खिलाफ लिखता है, तो अखबार का मालिक (सेठ) उसको रोक देता है। बेचारा पत्रकार मन मसोसकर रह जाता है। नौकरी छिन जाने का डर उसको सताता है। कड़वा सच है कि आज की पत्रकारिता लेट गई है।

भोपाल की पत्रकारिता की बात करें तो जाहिर होता है कि नये भोपाल और पुराने भोपाल की पत्रकारिता अलग-अलग है। नये भोपाल में बाजार है। दरअसल अब हमारी पत्रकारिता बाजार पर आश्रित हो गई है। बाजार ही तय करता है कि अखबार और पत्रिका में क्या और कैसा छपना चाहिए। सवाल उठता है कि हर न्यूज चैनल पर एक ही खबर क्यों चलती है? इसीलिए कि सरकार एक ही है। अब तो अखबारों में पत्रकारिता का काम कम और सूचना मात्र देने का काम अधिक हो रहा है। अखबारों को सरकार की चिंता रहती है, समाज की नहीं। छोटे अखबारों में सत्य है, लेकिन वे आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। सरकार भी इनके प्रति कम मेहरबान दिखाई देती है। दरअसल इस समय हमारी पत्रकारिता संक्रमण काल से गुजर रही है। पत्रकारिता का अवमूल्यन आज की एक बड़ी चिंता है।

श्री राकेश दीक्षित : अनुभवपरक खरी टिप्पणियों के लिए ख्यात वरिष्ठ पत्रकार श्री राकेश दीक्षित ने कहा – गाँधीजी 78 वर्ष जिये थे और 55 से 60 वर्ष पत्रकारिता की थी। इंडियन ओपीनियन, नवजीवन, हरिजन और यंग इंडिया की फाइलें उनकी साहसिक पत्रकारिता की साक्षी हैं। आज के संदर्भ में जब हम गाँधीजी की पत्रकारिता को देखते हैं, तो कई मार्गदर्शी सूत्र प्राप्त होते हैं।

गाँधी जी के वाक्य छोटे-छोटे अर्थात सूत्र वाक्य हुआ करते थे। हर वाक्य में सूचना पूर्ण रहती थी। वे समाचार में पहले जो बात दिमाग में आती थी, उसको लिख डालते थे। कंटेन्ट्स मजबूत है, तो उनको लिख

लिया करते थे। गाँधीजी की पत्रकारिता बताती हैं कि कथ्य में दम होगा तो फार्म अपने आप बन जाएगा। इन्ट्रो को सजाने की अधिक जरूरत नहीं है। अब तो न्यूज चैनल 'टीआरपी' और अखबार 'टारगेट' पर निर्भर होकर रह गए हैं। गाँधी का डा. अम्बेडकर से तीव्र वैचारिक विवाद था, फिर भी उनसे संबंधित समाचारों को और अपना पक्ष भी प्रस्तुत कर देते थे। स्पष्ट है कि गाँधीजी की पत्रकारिता एकपक्षीय नहीं थी। उन्होंने अपने संपादकीयों के द्वारा राजनीतिक विमर्श खड़ा किया था। गाँधीजी को ठीक से समझने के लिए उनकी पत्रकारिता को समझना और अपनाना होगा।

डा. उमाशंकर नगायच : दर्शन शास्त्र के विद्वान डा. उमाशंकर नगायच ने कहा – दर्शन शास्त्र कहता है कि व्यक्ति को ईश्वर से अलावा किसी अन्य से भयभीत नहीं होना चाहिए। यह सूत्र पत्रकारिता पर भी लागू होता है। निर्भीक पत्रकारिता ही सच्ची पत्रकारिता मानी जाती है। गाँधीजी और माखनलालजी की पत्रकारिता इसी श्रेणी की पत्रकारिता रही है। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलपति श्री दीपक तिवारी ने 'कर्मवीर' शताब्दी समारोह के प्रथम चरण के कार्यक्रम में रतोना के पशु वध गृह के संबंध में माखनलाल जी की निर्भीक पत्रकारिता का जिक्र किया था। वे मुंबई जा रहे थे, लेकिन यात्रा को स्थगित कर वापस जबलपुर लौटे और रतोना पशुवध गृह के बारे में सख्त संपादकीय लिखा। लगातार लिखा कि अँगरेज सरकार को अपना फैसला वापस लेना पड़ा था। माखनलालजी चाहते तो मुंबई पहुँचते और वापसी पर पशुवध गृह के बारे में संपादकीय लिखते, लेकिन उनके भीतर पत्रकारिता–धर्म इतना प्रबल था कि वे यात्रा अधूरी छोड़कर लौट आए। इस घटना से हमारे आज के पत्रकारों को प्रेरणा लेनी चाहिए। यह घटना बताती है कि पत्रकारिता में तत्परता और साहस का कितना महत्व होता है। माखनलालजी की लगन और निष्ठा ने तब पूरे प्रांत में जबरदस्त आंदोलन खड़ा कर दिया था। आज ऐसी तत्परता पत्रकारों में कहाँ देखने को मिलती है। आज के अखबार सूचना भी नहीं, केवल खबर देते हैं, जो अधिकांश सनसनीखेज और नकारात्मक रहती हैं। गाँधीजी सहिष्णुता बरते थे और सबकी बात सुनते और पढ़ते थे। जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है, जिससे वे न जुड़े हों। उनके विभिन्न आयामों पर शोध होना चाहिए। गाँधीजी के विचारों में संतुलन और समन्वय की दृष्टि थी। वे अपने विचारों को सुधारते भी थे। सत्य का अन्वेषण उनकी सफलता का आधार था।

श्री कमलेश पारे : सम–सामयिक विषयों खासतौर से किसानों और गाँवों पर अपनी धारदार टिप्पणियों के लिए सुपरिचित श्री कमलेश पारे ने कहा – मैं आजादी के बाद की पीढ़ी का सदस्य हूँ। सन 1969 में जब गाँधीजी की जन्म शताब्दी मनाई गई थी, तब आकाशवाणी से उनके भाषण (रिकार्ड) प्रसारित हुआ करते थे। वे भाषण मैंने भी सुने थे और उनके माध्यम से गाँधीजी को समझने की कुछ कोशिश की थी। उस वक्त में 17 साल का था। यह सच है कि उस उम्र में मैं गाँधीजी से कतई प्रभावित नहीं हुआ था। वे न तो अच्छे दिखाई देते थे और न उनकी लिखावट सुन्दर थी। उनका पहनावा भी एकदम साधारण था। उनके भीतर तब मैंने रोल मॉडल जैसी कोई बात नहीं पायी थी। हाँ, उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी को मैंने हर समय महसूस किया था। सर्वविदित है कि गाँधीजी की पत्रकारिता मूल्यों पर आधारित पत्रकारिता थी, जो अब सनसनीखेज बनकर रह गई है। गाँधीजी का एक–एक वाक्य परिपूर्ण और अर्थपूर्ण हुआ करता था। वे सहजता और ईमानदारी से लिखते थे। गाँधी को अप्रासंगिक बनाने की कितनी ही कोशिशें क्यों न कर ली जाएँ, वे आज भी प्रासंगिक हैं और भविष्य में भी प्रासंगिक बने रहेंगे। वे अपने सत्य के प्रयोगों के लिए सदा प्रणम्य रहेंगे। वे ईश्वर पर भरपूर विश्वास करते थे। उन्होंने अपने जीवन में भय को भी साध लिया था। अहिंसा उनका अंतिम उत्पाद था। वे अपनी भावनाओं के प्रति कठोर भी थे। आज विचारणीय यह है कि सत्य, अहिंसा और प्रेम को पत्रकारिता में कैसे जगह दे सकते हैं। आज इन मूल्यों को पत्रकारिता में लाने की बहुत आवश्यकता है। हमें गाँधीजी द्वारा स्थापित आदर्शों को पुन: देखना और उनको पत्रकारिता में उतारना होगा।

डा. रामवल्लभ आचार्य : प्रख्यात गीतकार डा. रामवल्लभ आचार्य का कहना था कि गाँधी को हमें

आज की परिस्थितियों में फिर से समझना होगा। उन्होंने सभी धर्मों का सम्मान करते हुए सर्वधर्म समभाव का आदर्श हमारे सामने रखा था, जिसमें सुखी और शांतिपूर्ण समाज के निर्माण का ध्येय अंतर्निहित है। वे इंसानियत में विश्वास करते थे। उनका राम कबीर का राम था। उन्होंने दुनिया को सहिष्णुता का अनूठा पाठ पढ़ाया था। उन्होंने मनुष्य को मनुष्य बनाने पर जोर दिया था।

श्री वसंत निरगुणे : लोककला और लोक साहित्य के अध्येता श्री वसंत निरगुणे ने कहा – ऐसे कई प्रसंग मिलते हैं, जो बताते हैं कि गाँधीजी अपने सिद्धांतों और व्रत को किसी भी परिस्थिति में छोड़ते नहीं थे। उन्होंने गोलमेज कान्फ्रेंस में भाग लेते समय अँगरेजों के प्रोटोकाल को भी नकार दिया था। आज गाँधी हमारे देश में किस रूप में बचे हैं, यह हमारे लिए चिंता और चिंतन का विषय है।

गाँधीजी ने जीवन भर पारदर्शी रहने की कोशिश की थी। जैसे वे बाहर थे, वैसे ही स्वच्छ और पवित्र भीतर से भी थे। उन्होंने अपने आंदोलनों के लिए हथियार लोक से उठाये थे। हमें उनको बाहर और भीतर झाँककर समझना और उनके बताए अनुसार आचरण करना चाहिए। तब ही उनको याद करना सार्थक होगा। पत्रकारिता भी जीवन का ही एक हिस्सा है। पत्रकारिता समाज के सुधार के लिए होना चाहिए।आजकल गाँधीजी को लेकर बातें तो बहुत हो रही हैं, किंतु उन्होंने जो रास्ता दिखाया था, उस पर चलने की प्रवृश्रि कमजोर पड़ गई है। उनके विचारों पर आचरण कम हो रहा है। हम सत्य से दूर हो गए हैं। हमें गाँधी को फिर से अपने जीवन में लाना होगा।

श्री राजन रायकवार : अँगरेजी के प्रतिभावान पत्रकार श्री राजन रायकवार ने कहा – गाँधीजी ने अँगरेज सरकार की रीति-नीतियों के प्रतिरोध में अखबार निकाले थे। पत्रकारिता में गाँधीजी का काफी योगदान रहा है। राष्ट्र के व्यापक हितों को साधने के लिए किस प्रकार की पत्रकारिता की जाना चाहिए, उन्होंने यह अपनी छह दशक की पत्रकारिता के माध्यम से बताया था।

श्री प्रकाश साकल्ले : पूर्व जनसंपर्क अधिकारी श्री प्रकाश साकल्ले ने कहा कि मैंने गांधी को खूब पढ़ा है और उनकी पत्रकारिता को भी समझने की कोशिश की है। समाज के हर वर्ग में गिरावट आ रही है। पत्रकारिता भी उससे अछूती नहीं रह सकती। गांधीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर कोई आवरण नहीं था। छल-छिद्र भी नहीं था। वे सत्य को जानने और समझने के लिए प्रयोग किया करते थे। गांधीजी ने जो अनुभव किया, उसी को पत्रकारिता के माध्यम से सामने रखा था। उन्होंने विचारों को अनुभव-सिद्ध किया था। जो निष्कर्ष मिले, उन्हीं को समाज के सामने रखा था। उन्होंने गाँठ बाँध ली थी कि उनको विदेशी सत्ता को हटाना है। हरिजनों को सम्मानजनक जीवन दिलवाने के लिए उन्होंने 'हरिजन' अखबार में खूब लिखा था।

सुश्री ममता यादव : न्यूज पोर्टल की संपादक के रूप में खरी पत्रकारिता के लिए पहचानी जाने वाली सुश्री ममता यादव ने कहा, धीरे-धीरे गाँधी को बाहर फेंक दिया गया है। मैं जब विद्यार्थी थी-तब ९वीं और १०वीं कक्षा में गांधीजी पर एक पूरी किताब निर्धारित थी। आज विद्यार्थियों के लिए गांधीजी पर कुछ नहीं है। इस कारण नई पीढ़ी गाँधीजी से अपरिचित होती जा रही है। इस पर गौर करने की बहुत जरूरत है। हम बातें तो बहुत करते हैं, किन्तु उन पर अमल नहीं करते। पत्रकारिता दुर्दशा के दौर से गुजर रही है। चरित्र हनन के दलदल में वह फँसती जा रही है। अधिकतर पत्रकारों को झुकने के लिए कहा जाता है, तो वे अखबारों के मालिकों और गलत लोगों के सामने लेट जाते हैं। ऐसी दशा में निष्पक्ष और भयमुक्त पत्रकारिता कहाँ से आएँगी ? हम अपनी पीढ़ी के लिए कुछ तो ऐसा सकारात्मक और अनुकरणीय छोड़कर जाएँ, जिस पर वह चलकर समाज और देश के हित में कुछ तो कर सके। यह संकल्प करना होगा कि जहाँ मान नहीं हो, वहाँ नहीं जाएँगे। गाँधी ने कहा था – दूसरों से कहने से पहले स्वयं को अपने जीवन में प्रयोग करके देख लेना चाहिए। जब प्रयोग ठीक साबित हो, तब ही उसके बारे में समाज को बताना चाहिए।

श्री गिरीश उपाध्याय : वरिष्ठ पत्रकार श्री गिरीश उपाध्याय ने कहा- गांधीजी निर्विवाद रूप से देश के महापुरुष थे। वे पूर्वाग्रह और दुराग्रह से सर्वथा मुक्त होकर बात करते थे। गांधीजी ने अपने कालखंड में जिन विचारों, प्रयोगों और आंदोलनों का हथियार

के बतौर प्रयोग किया था, उनके बारे में फिर से विचार कर आज के समय के अनुकूल उन पर आचरण करने की जरूरत है। उनके दो प्रमुख सिद्धांत थे – सत्य और अहिंसा। इस पर सोचा जाना चाहिए कि आज की पत्रकारिता में इन दोनों का किस सीमा तक प्रयोग हो रहा है। आज का मीडिया सबसे ज्यादा हिंसक हो गया है।

जहाँ तक सत्य का प्रश्न है, आज की पत्रकारिता तो सत्य को छिपाने का ही काम कर रही है। गांधीजी को आज की परिस्थिति में ठीक-ठीक समझने और जो निष्कर्ष मिले, उनके अनुसार आचरण करने की जरूरत है। यह विडंबना ही है कि नई पीढ़ी महात्मा गांधी और माखनलालजी के सिद्धांतों को जानने-समझने में अधिक रुचि नहीं ले रही है। यह तो वैसी ही स्थिति है-जैसी अपनी नाभि में कस्तूरी के रहते हिरण उसकी तलाश में यहाँ-वहाँ भटकता रहता है। जहालत, दलदल और अंधेरे में हम ऐसे फँस गए हैं कि अपने हित की चीजों को ठीक से पहचानना ही भूल गए हैं। हमारे पास क्या नहीं है ? दुनिया का हर तरह का ज्ञान हमारे पास है।

गांधी एक रोशनी है। सन 1969 में गाँधी जन्म शताब्दी वर्ष में उनको सबसे प्रिय सफाई के काम को स्कूलों में लिया गया था। गांधीजी ने अपने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया। जब हम गंदे को गंदा मानेंगे, तो निश्चित ही सुधार होगा।

डा. ऋतु शर्मा : डा. ऋतु शर्मा ने कहा – गांधीजी के तीन सिद्धांत थे – सत्य, अहिंसा और प्रेम। गांधीजी ने पत्रकारिता में कोई डिग्री प्राप्त नहीं की थी। वस्तुत: उन्होंने भावना से प्रेरित पत्रकारिता की थी। पत्रकारिता के जरिये वे जनता से जुड़े थे। अब तो पत्रकारिता का अवमूल्यन हो चुका है। सूचनाओं का भंडार है। खबरें ही खबरें हैं। उनमें मूल्यों और सिद्धांतों के लिए कोई जगह नहीं रह गई है। भावनात्मक उत्कर्ष की बात भी नहीं है।

श्री राजेन्द्र हरदेनिया : सप्रे संग्रहालय संचालक मंडल के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री राजेन्द्र हरदेनिया ने कहा कि यह देखा जाना चाहिए कि गांधीजी के कालखंड की चुनौतियाँ क्या थीं और उन्होंने उनका किस तरफ सामना किया। आज पूँजीवाद और कारपोरेट का दौर है। गलाकाट स्पर्धा के इस समय में हम कैसे सही ढंग की पत्रकारिता करें, इस पर गंभीरता से सोचने की जरूरत है। आज जो चुनौतियाँ हैं, उनसे गाँधीजी के सिद्धांतों की मदद से कैसे जूझ सकते हैं, इस बारे में सोचना होगा। गाँधीजी ने पत्रकारिता की मदद लेकर अपने विचारों का प्रसारित करने में सफलता प्राप्त की थी। वे राम को एक आदर्श के रूप में लाए थे। हमारी संस्कृति त्याग की ओर प्रवृत्त करती है। राम का चरित्र सामने रखकर गाँधीजी ने संदेश दिया कि मुफलिसी में रहकर भी त्याग के बल पर विपरीत हालात से जूझकर सफलता प्राप्त की जा सकती है। गाँधीजी ने स्वयं भी राम के चरित्र को चरितार्थ करके दिखाया था।

भगवान कृष्ण ने गीता में कर्म की प्रधानता का उपदेश दिया है। गाँधीजी ने एकादश व्रत की बात की। हमें आज की परिस्थितियों को समझकर काम करना होगा। यह सही है कि गाँधीजी के समय की और आज की परिस्थितियाँ भिन्न हैं। अब जूझने की नई शैली अपनाना होगी। उन्होंने जो किया और कहा है, उसको आज की परिस्थितियों में ढालना होगा। तब ही उनके सिद्धांतों के अनुरूप काम करना संभव हो सकेगा। आज पत्रकार के सामने बड़ा सवाल यह है कि उदर पोषण के लिए अखबार के मालिक की बात मानें या सही ढंग की पत्रकारिता करने के लिए कठिनाइयों से जूझने का रास्ता पकड़े। समय की माँग को देखते हुए हमें कबीरदास को याद कर उनके द्वारा बताए पर चलने के बारे में फैसला करना होगा। संकल्पवान होकर काम करेंगे, तब ही कुछ कर पाएँगे।

डा. एस.के. कुलश्रेष्ठ और डा. क्षमा पांडेय ने भी विमर्श में भागीदार कर अपने विचार रखें।

डा. रामाश्रय रत्नेश : अध्यक्षीय उद्बोधन में शिक्षाविद डा. रामाश्रय रत्नेश ने कहा कि आज नास्तिक और आस्तिक दोनों गाँधी को मान रहे हैं। सत्य को परिभाषित नहीं किया जा सकता। विमर्श में प्रबुद्धजनों ने बहुत उपयोगी विचार रखे हैं। इन विचारों के आधार पर पत्रकारिता की नई दिशाएँ तय की जा सकती हैं। आपने सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार प्रगट करते हुए कहा कि विमर्श काफी सार्थक रहा है।

● **संगोष्ठी/रपट : युगेश शर्मा**

महात्मा गांधी के एक सौ पचास वर्ष

महात्मा गांधी का प्रकृति चिंतन

■ कृष्ण गोपाल व्यास

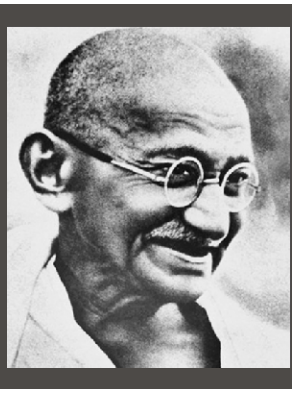

गांधीजी अनुभव करते थे कि हम प्रकृति के वरदानों का उपयोग तो कर सकते हैं किन्तु हमें उनको मारने का अधिकार नहीं है। गांधी जी यह भी मानते थे कि अहिंसा तथा संवेदना न केवल जीवों के प्रति बल्कि अन्य जैविक पदार्थों के प्रति भी होना चाहिए। नैसर्गिक पदार्थों का अतिदोहन जो लालच तथा ज्यादा लाभ के लिए किया जाता है वह जैवमण्डल को नुकसान पहुँचाता है।

महात्मा गांधी के प्रकृति चिन्तन से सम्बन्धित संदेश आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि उनके लेखों तथा विचारों में पर्यावरण सम्बन्धी दृष्टिबोध तथा पर्यावरण पर काम करने वालों के लिए कालजयी मार्गदर्शन मौजूद है इसलिए उपभोक्तावाद से त्रस्त अनेक लोग, गांधी दर्शन में मुक्ति तथा विकास का मार्ग खोज रहे हैं। आज से एक शताब्दी पूर्व 1909 में गांधीजी ने पश्चिमी समाज के आनन्द तथा समृद्धि की अंतहीन दौड़ को, समूची धरती तथा उसके संसाधनों के लिए गंभीर खतरा माना था। उनके लेखों को हिन्द स्वराज में संकलित किया गया है। इस पुस्तक में उन्होंने पश्चिमी समाज को, उनकी जीवनशैली के दुःप्रभावों के प्रति सचेत किया है। इसके साथ ही उन्होंने भारतवासियों से अनुरोध किया है कि वे भौतिक लाभों के लालच में न उलझें।

महात्मा गांधी के पर्यावरण से जुड़े कुछ प्रसिद्ध उद्धरण

- पृथ्वी, सभी व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त है किन्तु उनके लालच की पूर्ति के लिए नहीं।
- पृथ्वी, वायु, भूमि तथा जल हमारे पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्तियाँ नहीं हैं। वे हमारे बच्चों की धरोहरे हैं। वे जैसी हमें मिली हैं वैसी ही उन्हें भावी पीढ़ियों को सौंपना होगा।
- विश्व में एक नियमितता है। जो भी अस्तित्व में होता है उसके नियमन के लिए अपरिवर्तनशील नियम है। अन्धा नियम, किसी भी मनुष्य के व्यवहार को नियमित नहीं कर सकता।
- हम, विश्व में वनों के प्रति जो कुछ कर रहे हैं वह केवल उसका प्रतिबिम्ब है, जो हम अपने

तथा एक दूसरे के साथ करते हैं।

- जब तक मानव-संस्कृति के भौतिक नियमों के केन्द्र में अहिंसा नहीं होगी, हम प्रकृति के विरुद्ध हिंसा को रोकने के लिए, पर्यावरण सम्बन्धी गतिविधियाँ नहीं चला सकते।
- वन्य जीवन, वनों में कम हो रहा है किन्तु वह शहरों में बढ़ रहा है।
- विकास का त्रुटिपूर्ण ढाँचा, गाँवों से शहरों की ओर पलायन को प्रोत्साहित करता है।
- गांधीजी का दृष्टिकोण, पर्यावरण के प्रति व्यापक था। उन्होंने देशवासियों से, तकनीकों के अन्धानुकरण के विरुद्ध, जागरूक होने का आह्वान किया था। उनका मानना था कि पश्चिम के जीवन स्तर की नकल करने से, पर्यावरण का संकट पनप सकता है। उनका मानना था कि यदि विश्व के अन्य देश भी आधुनिक तकनीकों के मौजूदा स्वरूप को स्वीकार करेंगे तो पृथ्वी के संसाधन नष्ट हो जाएँगे।

महात्मा गांधी ने अपने प्रकृति चिन्तन में निम्न बिन्दुओं को महत्व दिया था

1. ग्रामों की आत्मनिर्भरता - ग्राम स्वराज
2. कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन
3. आयातित उपभोक्ता वस्तुओं पर नियंत्रण
4. कृषि में सुधार
5. अक्षय समाज
6. आर्थिक समानता
7. अहिंसा तथा जीवों के प्रति संवेदना तथा
8. स्वच्छता।

इक्कीसवीं सदी का मनुष्य, महात्मा गांधी के प्रकृति चिन्तन के विपरीत, अपनी नियति खुद गढ़ रहा है। वह अंतरिक्ष में कालोनी, रोबो द्वारा चलित मशीनें, कम्प्यूटर जैसी बुद्धि का विकास करने के लिए लगातार प्रयासरत है। उपरोक्त नियति निर्धारण के कारण, विश्व में उपभोग की प्रवृत्ति तथा विविध उत्पादनों में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है जिसके कारण, वैश्विक पर्यावरण तथा स्थानीय मौसम पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। इसके उदाहरण हैं - वैश्विक ऊष्मता, ओजोन परत का ह्रास, अम्लीय वर्षा, समुद्र स्तर में वृद्धि, वायु, जल तथा भूमि संक्रमण और मरुस्थलों के क्षेत्रफल में हो रही वृद्धि। यह वही नियति है जिससे बचने की बात महात्मा गांधी ने अपने प्रकृति चिन्तन में कही है। गांधीजी की सोच, पर्यावरण के प्रति मैत्रीपूर्ण थी। उस सोच में समाज के अंतिम व्यक्ति के हितों का ध्यान रखा गया है। उनका विश्वास था कि गरीबी और प्रदूषण एक दूसरे के पोषक हैं। गांधी जी का सरल जीवन का नुस्खा, प्राकृतिक साधनों के असीमित उपभोग तथा अंतहीन शोषण पर रोक लगाता है। यह उनके पर्यावरण सम्बन्धी सोच का सबसे बड़ा उदाहरण है। महात्मा गांधी की उपरोक्त सोच उस कालखंड में विकसित हुई जब वैज्ञानिक जगत भी पर्यावरण के कुप्रभावों से लगभग अपरिचित था। महात्मा गांधी के अनुसार गरीबों का शोषण रोकने के लिए बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों और ग्रामोद्योगों को साथ-साथ संचालित करना चाहिए।

ग्राम उद्योग को प्रोत्साहन

गांधी जी का कहना था कि जहाँ मानव श्रम द्वारा काम संभव नहीं हों तभी जन उपयोगी भारी भरकम कामों को मशीनों से कराया जाए। कार्य, राज्य की अधिकारिता में हों तथा जन-कल्याण उसका उद्देश्य हो। केन्द्रीकृत तथा विकेन्द्रीकृत तरीकों से उत्पादन किया जाए। आय तथा धन का वितरण समान हो तथा जन साधारण के हित साधे जा सकें। गांधी जी के अनुसार, मशीनीकरण तभी उपयोगी है जब काम करने वाले व्यक्तियों की संख्या कम तथा जल्दी कार्य पूरा करने की अनिवार्यता हो। भारत में मजदूरों की संख्या बहुत अधिक है इसलिए मशीनों का उपयोग हानिकारक है। इस सोच के कारण, वे मशीनों के प्रति अत्याधिक रुचि के खिलाफ थे। वे, ऐसे उपकरणों के पक्षधर थे जो अनावश्यक मानव - श्रम को कम करते हैं। वे, विशाल उत्पादन नहीं, अपितु बहु-

श्रमिक उत्पादन चाहते थे।

भारत में गरीबी, बेरोजगारी, आय की असमानता, भेदभाव इत्यादि को देखते हुए गांधी जी ने चरखे के उपयोग को, प्रतीक के रूप में, प्रोत्साहित किया था। उनका उद्देश्य, खादी तथा ग्राम आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित कर बेरोजगारी तथा गरीबी को कम करना था। गांधी जी का पूरा जीवन तथा उनके समस्त कार्य, मानवता के लिए पर्यावरण सम्बन्धी विरासत हैं। उन्होंने जीवन पर्यन्त, व्यक्तिगत जीवनशैली द्वारा, समग्र विकास की अवधारणा को प्रतिपादित किया। यद्यपि उनका लगभग सम्पूर्ण जीवन ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष में बीता, किन्तु वे हमेशा प्रकृति तथा शान्ति से जुड़े रहे। उनकी ताकत, उनका आत्मबल था। उनका संदेश पर्यावरण संरक्षण तथा समग्र विकास आधारित था। उनके सन्देश, भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए आज भी उपयोगी हैं।

औद्योगिकीकरण एक अभिशाप

गांधीजी का सोचना था कि औद्योगिकीकरण मानव जाति के लिए अभिशाप है। इससे लाखों नागरिकों को काम नहीं मिलेगा तथा प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होगी। आधुनिक विकास के कारण हुई पर्यावरणी हानि की अनेक बार क्षतिपूर्ति संभव नहीं होती। गांधीजी का विश्वास था कि कुटीर उद्योग तथा ग्राम उद्योग हजारों लोगों को सुविधाएँ तथा संसाधन उपलब्ध कराते हैं। उन्हें बढ़ावा देने से अनेक लोगों को काम मिलता है तथा राष्ट्रीय आय बढ़ती है। गांधीजी का सोचना था कि जीवित मशीनों को मृत मशीनों से मुकाबला नहीं करना चाहिए। गांधीजी का ग्रामीण संसाधनों पर आधारित मॉडल पर्यावरण को न्यूनतम हानि पहुँचाता है। उसके उपयोग से हुई पर्यावरणी हानि का नवीनीकरण या सुधार संभव है।

आर्थिक समानता

गांधीजी का आर्थिक समानता तथा सम्पत्ति के समान वितरण का सिद्धान्त इस अवधारणा पर आधारित था कि प्रत्येक व्यक्ति के पास उसकी प्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन होंगे। उन्होंने सम्पत्ति के समान वितरण का व्यावहारिक तरीका बताया था। इस तरीके के अनुसार हर व्यक्ति को अपनी आवश्यकताएँ न्यूनतम रखनी होंगी। दूसरों की गरीबी का ध्यान रखना होगा।

अहिंसा तथा जीवों के प्रति सम्वेदना

गांधीजी अनुभव करते थे कि हम प्रकृति के वरदानों का उपयोग तो कर सकते हैं किन्तु हमें उनको मारने का अधिकार नहीं है। गांधीजी यह भी मानते थे कि अहिंसा तथा संवेदना न केवल जीवों के प्रति बल्कि अन्य जैविक पदार्थों के प्रति भी होना चाहिए। नैसर्गिक पदार्थों का अतिदोहन जो लालच तथा ज्यादा लाभ के लिए किया जाता है वह जैव मण्डल को नुकसान पहुँचाता है। वह हिंसा है। इससे अन्य लोगों को जो उसका उपयोग करना चाहते हैं हानि होती है।

स्वच्छता

गांधीजी ने कहा था कि जीवन में स्वच्छता का स्थान सर्वोच्च है इसलिए गरीबी के कारण या उसकी आड़ में कोई भी शहर स्वच्छता की व्यवस्था से मुक्ति नहीं पा सकता। जो भी मनुष्य थूक कर वायु तथा जमीन को दूषित करता है या जमीन पर कचरा फेंकता है वह प्रकृति के विरुद्ध पाप करता है। हम स्नान करने में आनन्द महसूस करते हैं किन्तु कुआँ, जलाशय अथवा नदी को मल त्याग द्वारा गंदा करते हैं। हमें इन आदतों को पापाचार मानना चाहिए। हमारी उपर्युक्त आदतों के कारण हमारे गाँव तथा नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं। ऐसी अस्वच्छता बीमारियों का प्रसार करती हैं।

गांधीजी का पर्यावरणवाद नैतिक सिद्धान्तों पर आधारित था। गांधीजी का अपनी देह तथा दिमाग पर पूर्ण नियंत्रण था। इसलिए उन्होंने कभी भी ऐसा कोई उपदेश नहीं दिया जिसका वे अपने व्यक्तिगत जीवन में स्वयं पालन नहीं करते हों। यही उनका प्रकृति चिन्तन है। ❑❑

जनपद-आंदोलन

साहित्य में जनतंत्र का स्वर

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने जनपद-आन्दोलन चलाया, भाव था कि लोकभाषाओं के माध्यम से साहित्य का सन्देश खेतों-खलिहानों की बोली में खेतों-खलिहानों तक पहुँचे।

राहुलजी ने बोलियों के आधार पर जनपदों का रेखांकन किया। भोजपुरी, मैथिली, अंगिका, बज्जिका, बुंदेली, गढवाली, ब्रज आदि। कहीं क्षेत्रीयता का भाव तो नहीं जगेगा ? यह सवाल भी उठा ! हिन्दी का भी सवाल उठा और राष्ट्र का भी सवाल उठा ! पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने स्पष्ट किया कि जनपद-आन्दोलन सांस्कृतिक-स्वराज्य की अवधारणा है।

लोकभाषाओं में एक तेज आया था और उद्वेलन हुआ था। लक्ष्य था सामान्य जन तक साहित्य का अमृत संदेश पहुँचे। राजस्थान में बहुत काम हुआ। विजयदानदेथा, कोमलकोठारी, देवीलालसामर, नारायन सिंह भाटी, महेन्द्र भानावत कितने नाम याद आ रहे हैं। बहुत-सी पत्रिकाएँ निकलती थीं -- मरुवाणी, मरुभारती, रंगायन, राजस्थान-भारती आदि संस्थाओं में लोक कलामंडल, रूपायन संस्थान मरुभूमि शोध संस्थान आदि का समाचार मिलता रहता था । देवीलाल सामर ने तो कठपुतली को विश्वमंच पर प्रतिष्ठित किया। बिज्जी ने लोकवाद्य संग्रहालय बनाया था।

पंजाबी में सोहिन्दर सिंह बेदी ने काम किया। कौरवी में कुरुलोक संस्थान बना और श्रीकृष्णचन्द्र शर्मा ने मयराष्ट्रमानस नाम का सुन्दर ग्रन्थ निकाला। भोजपुरी में बहुत लोग थे -- राहुलजी जैसा नेतृत्व था। भिखारी ठाकुर जैसा कवि भोजपुरी के पास था। भोजपुरी एकेडमी बनी। लोरिकायन का प्रकाशन हुआ। मारीशस में भोजपुरी के सम्मेलन हुए। अंजोर और भोजपुरी लोक पत्रिकाएँ निकलीं। आचार्य महेन्द्र थे। चम्पारन में गणेश चौबे थे। कृष्णदेव उपाध्याय तो एक संस्था ही थे। उनका कार्य बहुत विस्तृत था।भोजपुरी में फिल्म भी बनी। मानवशास्त्र पर भी इस क्षेत्र में बड़ा काम हुआ। निमाड़ी में रामनारायन उपाध्याय बड़े ही समर्पित महापुरुष थे। मालवा में श्याम परमार, चिन्तामणि उपाध्याय ने काम किया था।

बघेली में भगवती प्रसाद शुक्ल का काम था। बुन्देली में नर्मदाप्रसाद गुप्त ने अकादमी बनाई और मामुलिया पत्रिका निकाली। कृष्णानन्द गुप्त तो लोकवार्ता नाम से पत्रिका निकालते थे। गौरीशंकर द्विवेदी, रामचरण हयारन मित्र, श्रीचन्द्रजैन आदि बहुत से नाम याद आ रहे हैं। सागर विश्वविद्यालय में बुन्देली विभाग बन गया ।

कुल्लूघाटी में पदमचन्द कश्यप का काम था। छत्तीसगढ में प्रारंभिक काम करने वाले तो स्वयं श्यामाचरण दुबे थे। दयाशंकर शुक्ल ने भी काम किया। आजकल यहाँ कालीचरण जी मड़ई नाम से पत्रिका निकाल रहे हैं। थार के लोकगीतों पर

श्री राहुल सांकृत्यायन

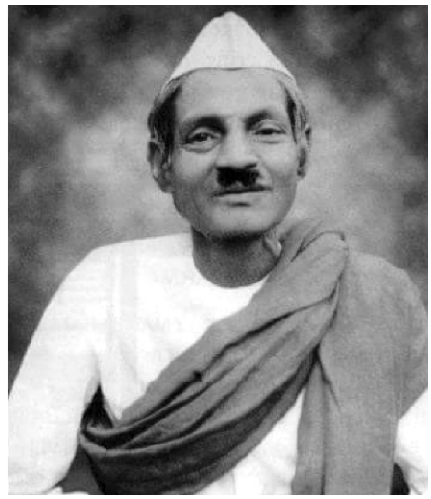

आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल

शंभुशरण शुक्ल ने काम किया। कांगड़ा में गौतम शर्मा, किन्नरी में वंशीराम शर्मा का महत्वपूर्ण काम है। डोगरी में ओंकार सिंह गुलेरी ने काम किया।

हरियाणा में देवीशंकर प्रभाकर, जयनारायन कौशिक और शंकरलाल यादव का काम महत्वपूर्ण है। संथाली में डोमन साहू समीर का काम है। अंगिका बज्जिका क्षेत्रों से अंगभारती और बज्जि भारती पत्रिका निकलती थी। बज्जिका-परिषद का समाचार भी मिल जाता था। कुमाऊं में मोहन उप्रैति थे। कल्लुई, गढवाली चंबियाली में तारादत्त गैरोला, गोविन्दचातक, त्रिलोचन पांडेय, गिरिजादत्त एशिवनारायन विष्ट, प्रयागदत्त जोशी, शिवानन्द नौटियाल ने अलख जगाया।

मगही में मगही-मंडल बना था। बिहान नाम की पत्रिका निकलती थी। श्रीकान्त, संपत्ति आर्याणी आदि के नाम प्रसिद्ध हुए। मैथिली में सबसे पहला नाम राम इकबाल सिंह राकेश का याद आ रहा है। तेजनारायण लाल ने भी काम किया। मैला आंचल तो इतना महत्वपूर्ण है । भोपाल से पत्रिका निकलती थी -- चौमासा। जनपदों की खोज खबर ले लेती थी। लोकभाषाओं का काम हिन्दी को सशक्त बनाने वाला काम है। व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता तो रहेगी ही।

जिन तीन मनीषियों ने हिंदी में जनपद-आंदोलन की टेर लगाई थी, वे तीनों ही अंतरराष्ट्रीयतावादी थे। आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल विश्वविख्यात कलाविद थे। राहुल सांकृत्यायन विश्व-नागरिक थे। रूस, श्रीलंका में भी रहे। उनका साहित्य मनुष्य का साहित्य है। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी विशालभारत के संपादक थे, रवींद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी के साथ रहने का सौभाग्य पाया था। रामानंद चट्टोपाध्याय के विश्वस्त थे। साहित्य में जनतंत्र का स्वर। जनता के बीच साहित्य और साहित्य में जनता। फरवरी 1940 के विशालभारत में अग्रलेख लिखा -- साहित्य का विकेन्द्रीकरण।

राहुलजी ने हिंदी के जनपदों की पहचान पर लेख लिखा -- बोलियों का सवाल उठाया। जनपदीय-जन की प्रतिष्ठा के लिए वासुदेवशरण जी ने स्वस्तिवाचन किया। लेख लिखा -- जनपदीय-साहित्य। इन तीन लेखों पर व्यापक प्रतिक्रिया हुई। मूर्त रूप देने वाली पहली संस्था का जन्म मथुरा में हुआ, ब्रज साहित्य मंडल। यह विचार संक्रामक हुआ, तब साम्यवादी दल ने शिवदान सिंह चौहान को थीसिस लिखने का काम सौंपा। रामविलास शर्माजी कुंडेश्वर तक गए। ❑

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली : पुनर्मूल्यांकन

■ डा. दिनेश मणि

वर्तमान युग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का युग है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न विषयों से संबंधित ज्ञान को सरल, सुबोध एवं रोचक शैली में जनसामान्य को उपलब्ध कराना हमारा दायित्व है। इसके लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण, विकास एवं मानकीकरण की आवश्यकता है। इस कार्य में त्वरित गति लाने तथा एकरूपता के साथ मानक निर्धारण में वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों, भाषाविदों, लेखकों, संपादकों एवं अनुवादकों सभी के सहयोग की अपेक्षा है। आज वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के पुनरीक्षण, संशोधन एवं सरलीकरण की आवश्यकता का अनुभव की जा रही है ताकि वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य की सुग्राह्यता तथा सुपाठ्यता में वृद्धि हो सके।

पारिभाषिक शब्द वैज्ञानिक लेखन की इकाई है। इसके बिना वस्तुओं और संकल्पनाओं की अभिव्यक्ति संभव नहीं है। वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीविद नये आविष्कार और खोज करते हैं, नई संकल्पनाओं, परिकल्पनाओं आदि को जन्म देते हैं और भाषाविद शब्द निर्माण में उनकी सहायता करते हैं। जिन संकल्पनाओं और वस्तुओं के लिए अपनी भाषा में पर्यायों का अभाव रहा, उनके लिए संस्कृत धातुओं, उपसर्गों और प्रत्ययों की सहायता से शब्द गढ़े गए अथवा निर्मित किए गए। इनके अतिरिक्त शब्द-रचना में संस्कृत संधियों और समासों का भी प्रयोग किया गया। पारिभाषिक शब्दों का तब तक कोई मूल्य नहीं जब तक वे प्रयोग में न लाए जाएँ। प्रयुक्त होने के बाद ही उनमें आवश्यक परिष्कार और संशोधन संभव है और इससे उनके प्रयोग में सहजता आती है।

राजभाषा हिन्दी के स्वर्ण जयंती समारोह में 14 सितम्बर, 1999 को राजभाषा विभाग द्वारा सी-डैक पुणे के माध्यम से तैयार कराई गई 'लीला हिन्दी प्रबोध' का विमोचन तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री के.आर. नारायणन द्वारा किया गया। इस अवसर पर महामहिम जी का यह कथन अत्यंत समीचीन है - ''आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है, इसलिए जनसाधारण की भाषा को सामान्य भावों और स्थापित परंपरा की कल्पनाओं के अलावा इस नये ज्ञान के प्रसार का माध्यम भी बनाना होगा। इसके लिए हिन्दी को विज्ञान से जुड़े नये विचारों और वैज्ञानिक शब्दों को ग्रहण करना होगा। यदि हिन्दी को विश्व की एक प्रमुख भाषा बनाना है तो इसे आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का माध्यम बनाना होगा। विश्वव्यापीकरण के इस युग में विदेशी भाषा का ज्ञान बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा। अंतत: यह ज्ञान हिन्दी और भारत दोनों को समृद्ध बनाएगा।''

जिन देशों में ज्ञान-विज्ञान का मौलिक मनन-चिन्तन हुआ वहाँ शब्द भी गढ़े गए और उनका इस्तेमाल हुआ। तकनीकी ज्ञान के साथ शब्दों के प्रचलन और प्रयोग के बाद ही उन्हें सामाजिक स्वीकृति मिलती है। जिन शब्दों को स्वीकृति नहीं मिल पाती, वे जीवित नहीं रहते। स्वीकृति और इस्तेमाल के बाद ही उन्हें कोश में स्थान मिल पाता

है। विकासशील देश अन्य देशों से ही ज्ञान-विज्ञान का शब्द-भंडार प्राप्त करते हैं। ऐसे में शब्दावली का विकास प्राकृतिक नहीं होता बल्कि संकल्पनाओं वाले शब्दों को देशीय रूप देने के लिए एक नियोजित रूप में उन्हें कृत्रिम रूप से गढ़ना पड़ता है। शब्द कैसे भी बनें, असली समस्या होती है उनके प्रयोग की। शब्द कठिन या सरल नहीं होते, बल्कि परिचित या अपरिचित होते हैं। बार-बार प्रयोग करने से अपरिचित लम्बा शब्द भी परिचित हो जाता है और सरल लगने लगता है।

स्मरण रहे, ज्ञान और भाषा का विकास एक साथ होता है। प्राय: भाषा के विकास की कसौटी उसकी 'अनुवादनीयता' मानी जाती है। अर्थात जिस भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा में अनूदित करने के लिए लोग लालायित रहते हों, वही भाषा विकास के सबसे ऊँचे सोपान में मानी जाती है।

आम आदमी की भाषा विज्ञान की भाषा से पृथक हो सकती है पर इससे यह न समझ लिया जाए कि जनसामान्य की भाषा में विज्ञान की बातें नहीं समझाई जा सकतीं। विज्ञान की भाषा में स्पष्टता तथा यथातथ्य निरूपण संभव है। हमारी सहज हिन्दी भाषा ने जिस तरह विश्व की समस्त भाषाओं के शब्दों को लिया है उसी प्रकार विज्ञान में शब्दों का तथ्यात्मक स्वरूप ही स्वीकार किया जाता है। भाषा का गुणात्मक या भावनात्मक स्वरूप साहित्य में स्वीकार किया जाता है तो सूचनापरक या तथ्यात्मक विज्ञान में। शब्द प्रयोग बदलते रहते हैं। विज्ञान की भाषा की विशेषता है - संक्षिप्तता, सटीकता। जब शब्द अधिक व्यवहार में आते हैं तो भाषा में आत्मसात हो जाते हैं।

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निर्देश-विधि से किसी शब्द-प्रयोग को स्थिर किया जाता है। पहले शब्द प्रयोग स्थिर किया जाता है फिर इसका अर्थ और परिभाषा। इस तथ्य को ही भाषाविद ब्लूमफील्ड ने इस प्रकार व्याख्यायित किया है - ''तकनीकी शब्द लंबे वाक्यांश या व्याख्यात्मक विवरण का स्थान ले लेते हैं जिनका अर्थ सर्वसम्मत परिभाषा से सुनिश्चित होता है, केवल उसी अर्थ में ही वैज्ञानिक जगत में उसका सर्वत्र प्रयोग किया जाता है।''

हर तकनीकी शब्द किसी न किसी शास्त्र से जुड़ा है। इसका ज्ञान तभी होगा जब पुस्तकों से उसकी परिभाषा देखी जाए। कोई भी शब्द इतना पारदर्शी नहीं होता कि उसके बारे में पूरी जानकारी एकदम मिल जाए। शब्द का बाहरी आकार जो अर्थ देता है उससे कहीं अधिक उसके भीतर छिपा होता है। शब्दों के साथ सूक्ष्मीकरण की प्रक्रिया भी जुड़ी होती है। ज्ञान-विज्ञान की गहराई में जाने पर शब्दों के भेद होते हैं और अलग-अलग संकल्पनाओं को उजागर और स्थिर करने के लिए अलग-अलग तकनीकी शब्द लेने होते है। दो-तीन अंतरों के कारण ही भिन्न-भिन्न शब्दों की आवश्यकता होती है। कभी-कभी एक शब्द के विभिन्न पर्यायों को अलग-अलग संदर्भ में भी प्रयुक्त करना होता है।

तकनीकी पारिभाषिक शब्दों के चयन अथवा रचना में इस बात का विशेष ध्यान विशेषज्ञों को रखना पड़ता है कि वे शब्द सभी भारतीय भाषाओं के लिए अधिकाधिक स्वीकार्य हों। ऐसा करने के अपने स्पष्ट लाभ हैं और इस हेतु संस्कृत को आधार चुना गया है, क्योंकि प्राय: सभी भारतीय भाषाएँ या तो संस्कृत से जन्मी हैं या वे संस्कृत से इतनी प्रभावित रही हैं कि उनके शब्द-संग्रह का एक बड़ा भाग संस्कृत शब्दों से बना है। इसके अतिरिक्त यह भी महत्वपूर्ण है कि नये शब्दों की रचना के लिए संस्कृत में ठोस नियम उपलब्ध हैं जो सामान्य बोलचाल की भाषाओं में कम मिलते हैं। यह बात अँगरेजी भाषा के साथ भी सही उतरती है और तकनीकी शब्दों के लिए उसे भी प्राचीन भाषाओं ग्रीक तथा लैटिन पर निर्भर रहना पड़ता है। परन्तु संस्कृत को आधार बनाकर पारिभाषिक शब्दों की रचना का अपना एक असुविधाजनक पक्ष भी है।

चूँकि हम लोगों में से अधिकांश का संस्कृत ज्ञान अत्यल्प है और हमारी शिक्षा व्यवस्था में इसके अध्ययन पर कोई बल नहीं दिया गया है, विशेषत: विज्ञान के छात्रों के संदर्भ में। अत: इस प्रकार के पारिभाषिक शब्द अधिकांशत: असहज तथा अपरिचित से लगते हैं। सैद्धांतिक रूप से स्वीकार्य होते हुए भी कई शब्द क्लिष्टता के कारण अव्यवहृत ही रह जाते हैं। इसके विपरीत अँगरेजी के तकनीकी शब्द अधिक सुपरिचित लगने लगते हैं। फलत: यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या अधिक सरल तथा अपेक्षतया परिचित शब्दों को चुना जाना चाहिए ?

शब्दों का निर्माण कर देना अथवा अनुवाद कर देना ही पर्याप्त नहीं है, जब तक वह शब्द प्रयोग में न आए उसका कोई व्यावहारिक मूल्य नहीं होता। शब्दावली के निर्माण एवं अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में कुछ आवश्यक तथ्य इस प्रकार हैं –

1. नये-नये शब्दों के मानकीकरण की प्रक्रिया तेज हो।
2. अनुवादकों को विषयवस्तु संबंधी प्रशिक्षण दिया जाए।
3. अनुवाद का दायित्व उन्हें ही सौंपा जाए जो विषयवस्तु में पूर्णत: निष्णात हों।
4. अनुभवी विद्वानों का सहयोग लिया जाए।
5. हिन्दी में अनुवाद करते समय (पर्याय ढूँढ़ते समय) सहजता, सुबोधता तथा सरलता पर विशेष ध्यान दिया जाए।

यह सर्वथा आवश्यक है कि भाषा में बोलचाल की भाषा के शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग हो। लेकिन भाषा के विकास के लिए मात्र इतना ही पर्याप्त नहीं। किसी भाषा को निरंतर पोषित करने के लिए शब्दों की निरंतर खोज अति आवश्यक है। ये शब्द आम बोलचाल, आंचलिक से होकर प्रकृति की ध्वनियों तक से चुने जा सकते हैं। नए शब्दों का निर्माण किया जा सकता है और यहाँ तक कि विभिन्न क्षेत्रीय, विदेशी भाषा के उपयुक्त शब्दों को अपनाया जा सकता है। वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा में तो शब्दों की विविधता का अत्यंत अभाव है, हम कुछ शब्दों पर अटक कर रह गए हैं और उन्हीं शब्दों की भरमार से तकनीकी भाषा का उबाऊ और नीरस बना देते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा के प्रसार हेतु साहित्य निर्माण के लिए हमें भाषा के कूपमंडूकतावाद से बाहर आना होगा। भाषा के विकास का प्रमुख सिद्धांत है – शब्दों की विविधता का समावेश। इससे भाषा रोचक, सुबोध और सरल बनती है।

विगत वर्षों के प्रयास ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अब प्रश्न सिद्धांतों का नहीं है, प्रश्न है व्यावहारिकता का और ऐसे शब्दों के प्रयोग का, जिन्हें देश भर में मान्यता प्राप्त हो सके और जिसके उपयोग से साहित्य आसानी से जनता को उपलब्ध कराया जा सके। शब्द की अर्थवत्ता, गरिमा और सुगंध को बचाना जरूरी है। शब्द की कहन सीमित हो सकती है मगर उसकी अर्थमयता का गगन विराट है। दूषित शब्दों के विकलांग अर्थ हमें व्यवसाय की तथाकथित सफलताएँ तो दे सकते हैं मगर मानव कल्याण की पुष्प-देह के लिए ये विषधर ही सिद्ध होंगे। इसलिए आज 'शब्द-यज्ञ' की आवश्यकता है। हमारा सांस्कृतिक चिन्तन शिथिल न होने पाए, इस जागरूकता की अपेक्षा हम सभी से है।

हमें यह स्मरण रखना होगा कि ग्रामीण परिवेश के लोग भी सौन्दर्य-बोध के धनी होते हैं। भाषा के सौंदर्य में भी उनकी गहरी रुचि है। इसलिए हिन्दी में वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य निर्माण की प्रक्रिया को अधिक रोचक, गतिशील और सौन्दर्य-बोध से परिपूर्ण बनाने के लिए भाषा को सीमित शब्दावली के बंधन से मुक्त करने की जरूरत है, ताकि वह निर्बाध रूप से बह सके। नये शब्दों, बिम्बों, आयामों, मुहावरों, शैलियों से उसे समृद्ध बनाने की आवश्यकता है।

(Email : dineshmanidsc@gmail.com)

यादों की आकाशगंगा में 'पंडित जी'

■ रमेश नैयर

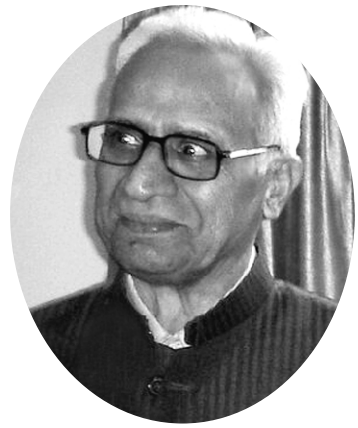

श्री राधेश्याम शर्मा

मूल्यों के धनी यशस्वी पत्रकार राधेश्याम शर्मा जी की भौतिक काया तो पंचतत्व में विलीन हो गई, परंतु उनकी यशकाया स्मृतियों की आकाशगंगा में दमक रही है।

मेरे लिए उनकी उजली यादों का विशेष महत्व इसलिए भी है कि मुझे पत्रकारिता में लाने का श्रेय उनको जाता है। एक संयोग यह भी कि नरकेसरी प्रकाशन के हिंदी दैनिक 'युगधर्म' से उन्हीं की तरह मैंने भी पत्रकारिता में प्रवेश किया था। दूसरी समानता यह कि कुछ समय अध्यापन के बाद वह पत्रकारिता में गए थे। यही स्थिति मेरी भी थी। मैं पुरानी भिलाई के पब्लिक स्कूल में अँगरेजी का व्याख्याता था। रायपुर से भिलाई आना-जाना किया करता था। देश के सार्वजनिक क्षेत्र का प्रथम सिरमौर स्टील प्लांट भिलाई में ही बना था। उन दिनों वहाँ रोजगार के काफी अवसर निकल रहे थे।

एक दिन पता चला कि एक व्यक्ति तीन-चार सौ रुपयों में ग्रेजुएशन की जाली डिग्रियाँ बेच रहा है। उनके बूते पर बाहरी प्रांतों से आए करामाती लोग नौकरियाँ भी हासिल कर रहे थे। मन में आया कि इस गोरखधंधे का भंडाफोड़ किया जाए। उन दिनों मेरा वेतन कुल जमा 320 रुपये मासिक था। किसी तरह जुगाड़ करके बीए की एक फर्जी डिग्री मैंने हासिल की। मेरी नजर में वह एक बड़ी खोजी खबर थी। मैंने दो अखबारों से संपर्क किया। लेकिन, दोनों ने उस खोजी खबर को कोई तवज्जो नहीं दी। फिर दैनिक 'युगधर्म' में दस्तक दी। उसके संपादक पद्माकर भाटे थे। उन्होंने मेरी बात को गंभीरता से लिया। कहा इस डिग्री को यहाँ छोड़ दो। नागपुर से इसका ब्लॉक बनवाकर लाने के बाद इसे प्रकाशित कर दिया जाएगा। तीसरे दिन फर्जी डिग्री सहित वह खबर छप गई। उसमें भाटे जी ने यह भी लिख दिया था कि खबर और फर्जी डिग्री रमेश नैयर के सौजन्य से मिली। मैं यह सोचकर कि भाटे जी को धन्यवाद देने के साथ ही फर्जी डिग्री पर खर्च हुई रकम भी ले लूँगा, गणेशराम नगर स्थित कार्यालय पहुँच गया। वहाँ भाटे जी की चेयर पर गौर वर्ण के प्रभावशाली कद काठी के कोई और सज्जन विराजमान थे। भाटे जी उनके सामने एक कुरसी पर बैठे थे। भाटे जी ने परिचय कराया। वे राधेश्याम शर्मा जी थे, भोपाल में नरकेसरी के सभी मराठी एवं हिंदी दैनिक समाचार पत्रों के विशेष प्रतिनिधि थे।

वह मुलाकात मेरे लिए सुखद इसलिए भी रही कि राधेश्याम जी ने कहा कि फर्जी डिग्री वाली खबर अच्छी थी। उसे अन्य संस्करणों में भी लिया गया है। बातचीत के दौरान उन्होंने भाटे जी को सुझाव दिया कि अँगरेजी में एम.ए. होने के नाते आप इनसे पीटीआई (प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया) की खबरों का अनुवाद करवा लिया करिए। ''मैं देखता हूँ कि आपके संस्करण में कई बार अनुवाद की हास्यास्पद अशुद्धियाँ रहती हैं। तत्काल निर्णय

हो गया कि भिलाई में अध्यापन के बाद रायपुर लौटकर प्रेस ट्रस्ट के प्रिंटर की खबरों का तीन-चार घंटों तक अनुवाद कर दिया करूँगा। पारिश्रमिक बहुत कम होने के बावजूद मुझे काम में रस आने लगा। मैं अध्यापन छोड़कर पूर्णकालिक श्रमजीवी पत्रकार बन गया। लगभग एक दशक तक मैं युगधर्म में रहा। उस दौरान राधेश्याम शर्मा जी से निरंतर संवाद बना रहा। वे भोपाल से टेलीफोन पर खबरें बताते और बहुधा मैं ही उन्हें तैयार करके प्रथम अथवा अंतिम पृष्ठ पर लगवा देता। उन दिनों कंपोजीटर एक-एक अक्षर को जोड़कर कंपोज किया करते थे। मोनो और लाइनो कंपोजिंग का चलन बाद में आया।

मार्च-अप्रैल 1974 में रायपुर से पहले अँगरेजी दैनिक 'द हितवाद' के प्रकाशन की चर्चा चली। मध्यप्रदेश में 'राइस किंग' कहे जाने वाले सेठ नेमीचंद श्री श्रीमाल को विद्याचरण शुक्ल ने - 'द हितवाद' के वित्तीय प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी। श्री शुक्ल ने 'द हितवाद' को लीज पर ले लिया था। रायपुर संस्करण के संपादन के लिए रामचंद्र संगीत की नियुक्ति की गई। खबर रायपुर में 'नवभारत' के प्रबंध संपादक गोविंदलाल वोरा तक पहुँची। उन्होंने नवभारत पत्र समूह के स्वामी रामगोपाल माहेश्वरी को इस बात के लिए राजी कर लिया कि 'द हितवाद' से पहले ही रायपुर से एम.पी. क्रॉनिकल का प्रकाशन शुरू कर दिया जाए। पी.टी.आई. समाचार एजेंसी सहित देश के अनेक राष्ट्रीय समाचार पत्रों के संवाददाता के रूप में सक्रिय मधुकर खेर ने मुझसे संपर्क किया। खेर साहब अत्यंत परिश्रमी और मूल्यों के धनी पत्रकार थे। देशभर के प्राय: सभी बड़े राजनेताओं से उनके संबंध थे। मुझे स्मरण है कि अटल बिहारी वाजपेयी और मधु लिमये उन्हें 'मधु' कह कर बात किया करते थे।

मेरे जैसे युवा पत्रकारों को वह बहुत प्रोत्साहित करते थे। प्राय: प्रतिदिन फोन करते। किसी पत्र-पत्रिका में मेरी कोई रिपोर्ट छपती तो उस पर प्रसन्नता व्यक्त करते। खेर साहब सौ टका पत्रकार थे। विजयादशमी पर वह कलम की पूजा के लिए कहते। उनकी दृष्टि में लेखनी ही पत्रकार का सबसे बड़ा शस्त्र है। इसी प्रकार दीपावली के दिन वह एक लेख अथवा रपट अवश्य लिखने के लिए कहते, क्योंकि पत्रकार की लक्ष्मी उसके लेखन से ही प्रसन्न होती है।

खेर साहब ने रायपुर के कॉफी हाउस में एम.पी. क्रानिकल जॉइन कर लेने के लिए कहा। मैं भी चाहता तो यही था, परंतु राधेश्याम शर्मा जी के विश्वास को नहीं तोड़ना चाहता था। मैंने अपनी दुविधा खेर साहब को बताई तो उन्होंने भरोसा दिलाया कि घर पहुँचकर वह राधेश्याम जी से बात कर लेंगे। उसी रात मेरे घर पर राधेश्याम शर्मा जी का फोन आया। उन्होंने खेर साहब के संवाद की चर्चा करते हुए कहा कि क्रॉनिकल वाले चूँकि अच्छा वेतन देने वाले हैं और अँगरेजी पत्रकारिता में अच्छा स्कोप भी है, इसलिए वह मुझे कार्यमुक्त करने को भी तैयार हो गए। मुझे राधेश्याम जी के मन की विशालता ने बहुत प्रभावित किया। अखबार बदल लेने के बाद भी मेरे उनके संबंधों में कोई बदलाव नहीं आया। मैं उन्हें पंडित जी कहा करता था। जुलाई 1978 में उनका चंडीगढ़ से फोन आया कि वह द ट्रिब्यून ट्रस्ट के 'दैनिक ट्रिब्यून' में आ गए हैं। वहाँ संपादक बनने के बाद मुझे राष्ट्रीय महत्व के प्रसंगों पर लिखने के लिए कहते रहे। मुझे पारिश्रमिक भी प्राय: हर महीने चैक से मिल जाता। सन 1982 के अक्टूबर में उनका संदेश मिला कि दैनिक ट्रिब्यून में सहायक संपादक के पद के लिए विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। वेतन और अन्य सुविधाएँ रायपुर के अखबारों की तुलना में बहुत अच्छी हैं, इसलिए आवेदन भेज दूँ। यह जानकारी भी दी कि प्रधान संपादक प्रेम भाटिया के साथ ट्रिब्यून के ट्रस्टी भी साक्षात्कार में रहेंगे। यह हिदायत भी कि इस सूचना को गोपनीय रखा जाए।

मैंने आवेदन भेज दिया। नवंबर के अंतिम सप्ताह में मुझे ट्रिब्यून में इंटरव्यू के लिए पहुँचने की सूचना मिली।

मैंने ट्रेन से दिल्ली और फिर वहाँ से चंडीगढ़ के लिए बस पकड़ी। उन दिनों मैं प्रतिष्ठित साप्ताहिक 'दिनमान' के लिए लिखा करता था। श्री रघुवीर सहाय फोन पर निर्देश दिया करते थे कि रपट में केवल घटनाक्रम ही नहीं, उसके साथ ही राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि का भी समावेश होना चाहिए। मैं निष्ठापूर्वक उनके निर्देशों का पालन करता। मेरा सौभाग्य था कि मध्यप्रदेश के अलावा उड़ीसा (वर्तमान में ओडिशा) के महत्वपूर्ण प्रसंगों पर मेरी लगभग एक दर्जन आवरण कथाएँ 'दिनमान' में प्रकाशित हुईं। उसका मानदेय भी बहुत अच्छा होता था। उन दिनों एक आवरण कथा पर जब एक हजार रुपयों का चैक मिलता तो खुशी से चहक जाया करता था। दैनिक ट्रिब्यून में मेरे चयन में 'दिनमान' में प्रकाशित आलेखों की भी निश्चय ही भूमिका रही होगी।

बस से जब दिल्ली से चंडीगढ़ जा रहा था तो उसमें दिल्ली के एक पत्रकार से भेंट हुई। पूर्व परिचय होने के नाते उन्होंने बताया कि वह चंडीगढ़ दैनिक ट्रिब्यून में इंटरव्यू देने जा रहे थे। सहजता से उन्होंने श्री राधेश्याम शर्मा द्वारा उन्हें लिखा गया एक पत्र भी दिखाया, जिसमें उन्हें आश्वस्त किया गया था कि वह स्वयं भी इंटरव्यू में रहेंगे और उनकी मदद करेंगे। जब उन्होंने मेरे चंडीगढ़ जाने का सबब पूछा तो मैंने साफगोई से बताया कि जा तो मैं भी उसी ध्येय से रहा हूँ। चूँकि ट्रिब्यून के पत्र में रायपुर से चंडीगढ़ जाने और वहाँ से लौटने का रेल का प्रथम श्रेणी का किराया और आवास आदि का व्यय देने का उल्लेख किया गया है इसलिए लौटते समय मैंने सेकण्ड क्लास में आने का रिजर्वेशन करा लिया है। उससे जो बचत होगी, उससे चंडीगढ़ घूम लूँगा। परंतु राधेश्याम जी का उनको लिखा पत्र देख कर मुझे थोड़ी ग्लानि हुई। वह इसलिए कि उन्हीं का फोन मिलने पर मैंन चंडीगढ़ जाने का मन बनाया था।

किस्सा कोताह यह कि ट्रिब्यून के शानदार व्यवस्थित भवन और वहाँ के पत्रकारों के ठाठ देखकर मुझे हीन भावना ने जकड़ लिया। चूँकि मुझे तब तक विश्वास सा हो गया था कि चयन तो उन्हीं सज्जन का होगा, जिन्हें राधेश्याम जी ने पत्र भेजकर बुलवाया है, इसलिए मुझे सहज होने में बहुत देर नहीं लगी। इंटरव्यू बोर्ड में प्रधान संपादक प्रेम भाटिया, जनरल मैनेजर पूर्व आईएएस सत्यदेव भांभरी, प्रख्यात पूर्व आईसीएस डा. महिंदर सिंह रंधावा, सेवानिवृत्त जनरल ज्ञानी और राधेश्याम जी के अलावा एक और ट्रस्टी थे। पंजाब उन दिनों खालिस्तानी आतंकवाद के कारण प्राय: प्रतिदिन अखबारों की सुर्खियों में रहता था। जाहिर है, उसी के कारण रंधावा साहब ने पहला प्रश्न किया, ''जब कई लोग पंजाब से बाहर भाग रहे हैं तो तुम क्यों यहाँ आना चाहते हो?'' मेरा जवाब था, ''जी यह मेरा वतन है।''

उन्हीं का दूसरा प्रश्न था, ''जब हर रोज लोग मारे जा रहे हैं तो तुम्हें डर नही लगता?'' मेरा उत्तर था, ''जी मैं साढ़े सात साल की उम्र में विभाजन के दौरान पाकिस्तान में आ चुके पश्चिम पंजाब से हिंदुस्तान आया था तो हत्याओं के उस खूनी दौर में सौभाग्यवश अमृतसर सही सलामत पहुँच गया था। आप सब मुझसे बड़े हैं। ज्यादा जानते होंगे। मेरी जानकारी के अनुसार तब दस लाख से ज्यादा लोग मारे गए थे। उसी समय से मेरा मौत से डर खत्म हो गया था।''

मेरा इंटरव्यू लंबा चला। परंतु राधेश्यामजी ने एक भी प्रश्न नहीं पूछा। प्रेम भाटिया साहब से जरूर उन्होंने उनके बहुत पास पहुँचकर कुछ कहा, जो मुझे सुनाई नहीं दिया। भाटिया साहब ने रंधावा जी से कुछ कहा। उसके बाद मुझसे कहा गया कि मैं बाहर रुकूँ। मुझे फिर से बुलाया जा सकता है।

शेष सभी उम्मीदवारों के इंटरव्यू संपन्न हो जाने के बाद मुझे फिर बुलाया गया। जनरल ज्ञानी ने पूछा, ''व्हाट आर युअर एक्सपैक्टेशन्स ?'' मेरी समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दूँ। बस यही कह सका कि मैं ट्रिब्यून में काम करना चाहता हूँ। रंधावा साहब ने कहा - ''लड़का बहुत सीधा है। इसे दो एडवांस इंक्रीमेंट्स दे दो। जी.एम. भांभरी साहब ने कहा, अपना एपाइंटमेंट लेटर लेकर जाना और जल्द ही जॉइन कर लेना। इंटरव्यू खत्म हो गया। ट्रस्टी और भाटिया साहब चले गए। मैं नियुक्ति पत्र के लिए बैठा था कि खबर आई कि दैनिक ट्रिब्यून के संपादक जी ने बुलाया है। उनके दफ्तर में पहुँचा तो उन्होंने मेरी पीठ थपथपाते हुए कुछ खिन्नता से कहा ''तुमने पूरे इंटरव्यू के दौरान मेरी तरफ एक बार भी देखा तक नहीं।'' मैंने दो टूक कह दिया, ''आपका पत्र मैंने बस में मेरे साथ आए अमुक प्रत्याशी के पास देखा था, इसलिए सोचा कि आपका मन तो उन्हें रखने का है।'' वह सज्जन आजकल दिल्ली में एक पत्र के संपादक और स्वामी हैं।

शर्मा जी ने कतई बुरा न मानते हुए कहा, ''रमेश जी मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानता हूँ। मुझे भरोसा नहीं हो रहा था कि तुम इंटरव्यू में आओगे कि नहीं। मुझे यह अनुमान नहीं था कि तुम भाटिया साहब और ट्रस्टियों को इतना प्रभावित कर सकोगे। वे तुमको आठ इंक्रीमेंट देने को तैयार थे। एक इंक्रीमेंट सौ रुपये का होता है। तुम मेरी तरफ एक बार भी देख लेते तो मैं कोई संकेत कर देता।''

मैं दैनिक ट्रिब्यून में पाँच वर्ष तक रहा। वे मेरी पत्रकारिता के सर्वाधिक सुखद वर्ष थे। ट्रिब्यून समूह के तीनों संस्करणों के अनेक सीनियर पत्रकारों से जो प्यार मिला, वह मेरी यादों के सबसे ज्यादा चमकते हुए सितारे हैं। राधेश्याम जी और उनकी धर्मपत्नी तो मेरे अभिभावक भी रहे। खोसला बहुत आत्मीय थे। उन्होंने निरंतर स्नेह बनाए रखा। फरवरी 2005 में खोसला जी मुझे देश के सात अन्य पत्रकारों के साथ यूरोपीय पत्रकार संगठन की संगोष्ठियों में एवं अन्य यूरोपीय देशों में ले गए। इस बीच राधेश्याम जी से भी सतत संपर्क-संवाद बना रहा। दैनिक ट्रिब्यून में मेरे अंतरंग मित्र एवं साथी अशोक मलिक से चार दशकों से अधिक समय से आज तक संवाद बना हुआ है।

उनके अलावा स्वतंत्र सक्सेना और डा. चंद त्रिखा से भी संपर्क बना रहा। त्रिखाजी पत्रकार के अलावा साहित्यकार भी हैं। पंजाब में उन्होंने आतंकवाद के विरुद्ध लामबंद साहित्यकारों की रचनाओं के संकलन प्रकाशित करने में रचनात्मक भूमिका निभाई। उनमें पंजाब के कवियों का एक संकलन 'काली नदी' आज भी मेरे पास है। मेरे हम उम्र होते हुए भी त्रिखा जी लेखन में सक्रिय हैं।

उन दिनों जब मैं दैनिक ट्रिब्यून में शर्मा जी के साथ सहायक संपादक था और उनकी अस्वस्थता के दौरान उस दिन तक भी जब उन्होंने अपनी वाणी नहीं खो दी, वह दिन मेरे लिए बहुत मार्मिक और हृदयविदारक था जब मैंने उनके पुत्र अशोक, जिसे वह प्यार से पप्पूजी कहा करते थे, को फोन करके उनका कुशल क्षेम पूछना चाहा। अशोक ने कहा, ''चाचा जी, आपका नाम सुनकर पिता जी आपसे बात करने को आतुर हैं। मैं उनको मोबाइल दे रहा हूँ। लीजिए, बात करिए।'' मैं प्रणाम करने के बाद उनसे कुछ सुनने को व्यग्र था। दो-तीन मिनट तक मैं उनके शीघ्र स्वस्थ हो जाने की कामना करता रहा, परंतु तब तक शायद वह अपनी वाणी खो चुके थे। अशोक ने निराशाभरे स्वर में कहा, ''चाचा जी, बहुत चाहते हुए भी पिता जी के मुँह से एक शब्द नहीं निकल पा रहा है।'' मुझे लगा जिस वाणी में भरी भीड़ के कोलाहल को भेद कर दूर तक पहुँच जाने का ओज हुआ करता था, वह आज इतनी बेबस कैसे हो गई।

उनकी वह आवाज अनंत अंतरिक्ष में विलीन हो गई, जिसे मैं पचपन वर्षों से सुनता आया था।

वय में राधेश्याम शर्मा जी मुझसे सात वर्ष बड़े थे। वह युगधर्म के बहुमुखी विकास का दौर था। वह रायपुर का पहला दैनिक था जिसने अपना स्वयं का भवन बनवाया था। भवन के उद्घाटन के लिए अदम्य साहसी और राजसत्ता के हर विचलन पर पूरी आक्रामकता के साथ प्रहार करने वाले इंडियन एक्सप्रेस पत्र समूह के स्वामी रामनाथ गोयनका एवं ग्वालियर की राजमाता विजयाराजे सिंधिया रायपुर आई थीं। गोयनका जी से उस अवसर पर कुछ बातचीत भी हुई। उनसे यह जानकारी मिली कि बड़ी से बड़ी राजसत्ता से लोहा लेने की उनकी निर्भयता का रहस्य क्या है। उस पर विस्तार से चर्चा फिर कभी। फिर भी उनके एक वाक्य की अनुगूँज लगभग आधी सदी से रह-रह कर सुनाई देती रही है। वह यह कि ''घर से एक लोटा लेकर ही तो चले थे। उसे तो कोई नहीं छीन सकेगा।''

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- सन 1952 में पत्रकारिता में प्रवेश। सन 1956 से पूर्णकालिक श्रमजीवी पत्रकार। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि के संस्थापक महानिदेशक। (कालांतर में इस पद को कुलपति में परिवर्तित कर दिया गया।)
- हिमाचल विश्वविद्यालय में पत्रकारिता के विजिटिंग प्रोफेसर।
- 'दैनिक ट्रिब्यून' से सेवानिवृत्त होने के बाद 'दिव्य हिमाचल' और 'दैनिक भास्कर' (हरियाणा) के सलाहकार संपादक।
- विदेश यात्राएँ - सोवियत संघ, जर्मनी, फ्रांस, इटली और पाकिस्तान।
- हरियाणा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष।
- पत्रकारिता की महत्वपूर्ण पत्रिका 'आंचलिक पत्रकार' के लिए नियमित लेखन।
- पत्रकारिता पर दो पुस्तकें - जनसंचार और मीडिया : क्रांति या भ्राँति का लेखन-संपादन।

(Email : rameshnayyar50@gmail.com)

स्मृति शेष

हिन्दी प्रकाशन के पुरोधा श्री श्यामसुंदर

'प्रभात प्रकाशन' के संस्थापक श्यामसुंदर जी का 92 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। उन्होंने जीवनभर राष्ट्रवादी एवं प्रेरणादायी साहित्य का विपुल प्रकाशन किया। ऐसा साहित्य, जो न केवल नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देता है, बल्कि समाज-जीवन और राष्ट्र-जीवन में आदर्शों की भी स्थापना करता है। वे प्रखर हिन्दी-सेवी के रूप में सदैव याद किए जाएँगे।

उनका ध्येय था कि विश्व की सभी भाषाओं का श्रेष्ठ साहित्य हिन्दी पाठकों को भी उपलब्ध हो। उनका जन्म और आरंभिक शिक्षा मथुरा में ही हुई। उसके बाद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक, स्नातकोत्तर और लॉ की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। वे इलाहाबाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक रहे प्रोफेसर रज्जू भैया के संपर्क में आए। वहीं से वे संघ के स्वयंसेवक बने। वे पढ़ाई के साथ-साथ संघ के विस्तार का काम भी करते थे।

सन 1958 में उन्होंने दिल्ली में प्रभात प्रकाशन की नींव रखी। धीरे-धीरे प्रभात प्रकाशन हिन्दी जगत में एक विशिष्ट नाम बनकर उभरा। उन्होंने विश्व प्रसिद्ध एवं नोबेल पुरस्कार से सम्मानित लेखकों जैसे - टालस्टॉय, मार्क ट्वेन, ऑस्कर वाइल्ड, चार्ल्स डिकेंस, आंतोन चेखव की मूल रचनाओं के श्रेष्ठ हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किए। उन्होंने अनेक नवोदित लेखकों की पुस्तकें प्रकाशित कर उन्हें साहित्य-सेवा के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने हिन्दू धर्म, संस्कृति, दर्शन और अध्यात्म के पुरोधा स्वामी

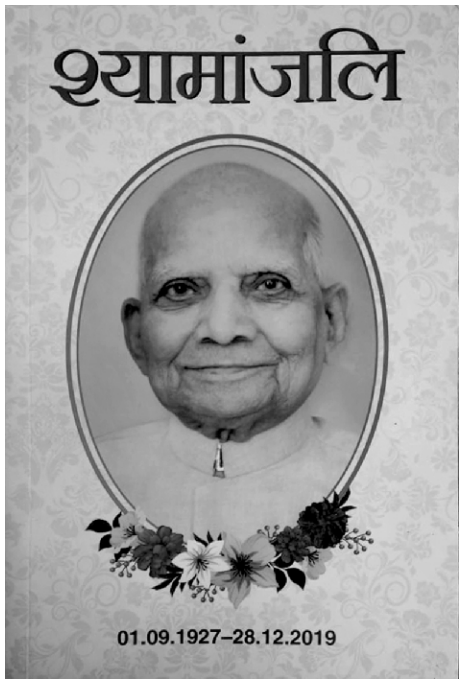

विवेकानंद एवं स्वामी रामतीर्थ प्रभृति महर्षियों की पुस्तकों और बांग्ला लेखकों – बंकिमचंद्र चटर्जी, शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर की पुस्तकों का प्रकाशन किया। सन 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के बाद उन्होंने आम जनता में राष्ट्र के प्रति प्रेम, अनुराग तथा स्वाभिमान जाग्रत करने और भारतीय सशस्त्र बलों के रणबाँकुरों के शौर्य और पराक्रम से परिचित कराने के लिए भी अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया, जिनका फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ ने अनुमोदन किया।

उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद, डा. शंकरदयाल शर्मा, डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पुस्तकें प्रकाशित कीं। अनेक विशिष्ट साहित्यकारों – वृंदावनलाल वर्मा, लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, महादेवी वर्मा, प्रभाकर माचवे, विजयेंद्र स्नातक, विष्णु प्रभाकर, विद्यानिवास मिश्र एवं अज्ञेय के साथ वे साहित्यिक सत्संग करते थे। उन्होंने उनकी कई श्रेष्ठ पुस्तकों का प्रकाशन भी किया। इतना ही नहीं, विश्वप्रसिद्ध विभूतियों – बराक ओबामा, बिल क्लिंटन, हिलेरी क्लिंटन, नेपोलियन हिल, डेल कारनेगी, लुइस एल.हे. एवं जोसेफ मर्फी आदि की पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किए।

सन 1995 में उन्होंने डा. शंकरदयाल शर्मा की प्रेरणा, श्री अटल बिहारी वाजपेयी के मार्गदर्शन एवं पं. विद्यानिवास मिश्र के संपादन में साहित्यिक मासिक पत्रिका 'साहित्य अमृत' का प्रकाशन प्रारंभ किया। हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं में इसका विशिष्ट स्थान है। समय–समय पर निकाले गए संग्रहणीय एवं पठनीय विशेषांकों के लिए यह पत्रिका हिन्दी–जगत में चर्चा का विषय बनी हुई है।

जीवन के अंतिम दिन तक वे आसफ अली रोड स्थित प्रभात प्रकाशन के कार्यालय में काम कर रहे थे, जो उनके सच्चे कर्मयोगी होने को सिद्ध करता है।

वर्तमान में प्रभात प्रकाशन हर रोज औसतन एक नई पुस्तक प्रकाशित करता है। प्रभात प्रकाशन की विशिष्टता बताने वाले कुछ प्रमुख बिन्दु इस प्रकार हैं –

- 1000 से भी अधिक लेखक,
- 5000 से अधिक हिन्दी पुस्तकें,
- 600 से अधिक अँगरेजी पुस्तकें,
- 1500 से अधिक पुस्तक विक्रेता,
- 50 से अधिक अनुवादक,
- हिन्दी बेस्टसेलर पुस्तकों के अग्रणी प्रकाशक,
- 75 से अधिक विषय और
- 5000 से अधिक इ–बुक्स।

यही श्री श्यामसुन्दर जी की विरासत है।

(Email : prabhatbooks@gmail.com)

पत्रकार ऐसी खबरें लिखें कि सरकार भी हिल जाए

सप्रे संग्रहालय में राज्यस्तरीय पत्रकारिता पुरस्कार समारोह संपन्न

श्री आसिफ इकबाल को गंगाप्रसाद ठाकुर पुरस्कार

पत्रकारिता का पेशा सीधे-सीधे समाज और सरकार से जुड़ा हुआ है। ऐसे में पत्रकारों का दायित्व बनता है कि वे ऐसी खबरें सामने लाएँ जिससे सरकार भी हिल जाए। यह कहना है जनसंपर्क मंत्री पी.सी. शर्मा का। वे 18 जनवरी को माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय पत्रकारिता पुरस्कार समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरेश पचौरी ने की। संग्रहालय के सभागार में आयोजित समारोह में मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के करीब डेढ़ दर्जन से ज्यादा पत्रकारों को सम्मानित किया गया।

जनसंपर्क मंत्री ने कहा कि सप्रे संग्रहालय द्वारा जो सम्मान या पुरस्कार दिए जाते हैं, वे बेहद गरिमामयी होते हैं। यहाँ सम्मानित विभूतियों का चयन बड़ी बारीकी से किया जाता है। उन्होंने सोशल मीडिया और डिजिटल पत्रकारिता से जुड़े पत्रकारों को सम्मानित करने का सुझाव भी दिया। इतिहास को सँजोने की दिशा में संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए जनसंपर्क मंत्री पी.सी. शर्मा ने कहा कि संग्रहालय से उनका पुराना नाता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरेश पचौरी ने कहा कि सप्रे संग्रहालय की यात्रा काफी संघर्षपूर्ण और चुनौतीभरी रही है। लेकिन इस सबके बाद भी इस संस्था ने देश भर में जो अपनी पहचान बनाई है वह गौरवान्वित करती है। इस संग्रहालय की प्रशंसा तत्कालीन राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा भी किया करते थे। उन्होंने कहा कि जिन्हें पुरस्कार मिले हैं नि:संदेह उनके कार्यों से समाज लाभान्वित हो रहा है लेकिन जिनकी स्मृति में इन पुरस्कारों की स्थापना की गई है उनके कार्य भी नई पीढ़ी को प्रेरणा देते हैं।

इसके पूर्व संग्रहालय के संस्थापक-संयोजक विजयदत्त श्रीधर ने कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्ष 1986 से पुरस्कारों का यह सिलसिला जारी है। इसके पीछे हमारा भाव समाज में हो रहे अच्छे कार्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना तो है ही, साथ ही जिनके नाम पर इन पुरस्कारों की स्थापना की गई है उनके कार्यों से नई पीढ़ी को परिचित करने की मंशा भी है। उन्होंने कहा कि इन प्रतिभाओं का चयन हम लोगों से आपसी चर्चा के आधार पर करते हैं। यह पूरी तरह से जनतांत्रिक तरीका है जिससे सही और योग्य व्यक्ति का चयन स्वत: ही हो जाता है। सम्मानित पत्रकारों की ओर से पंकज मुकाती, इंदौर और आसिफ इकबाल, रायपुर ने विचार रखे।

इनका हुआ सम्मान : आरंभ में पत्रकारिता की शिक्षा में दीर्घ योगदान के लिए माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलाधिसचिव डा. श्रीकांत सिंह को सम्मानित किया गया। इसके बाद वरिष्ठ पत्रकार कमाल खान कमाल, रमेश तिवारी, सर्वदमन पाठक, महेश दीक्षित और मुकुन्द प्रसाद मिश्र को 'हुक्मचंद नारद पुरस्कार' प्रदान किया गया। इसके साथ ही संतोष कुमार शुक्ल लोक संप्रेषण पुरस्कार - अखिल कुमार नामदेव, माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार-पंकज मुकाती, लाल बलदेव सिंह पुरस्कार-रश्मि खरे, जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी पुरस्कार-विकास वर्मा, झाबरमल्ल शर्मा पुरस्कार - संजीव कुमार शर्मा, रामेश्वर गुरु पुरस्कार-महेश सोनी, के.पी. नारायणन पुरस्कार - डा. ऋतु पाण्डेय शर्मा, राजेन्द्र नूतन पुरस्कार- विनोद त्रिपाठी, गंगाप्रसाद ठाकुर पुरस्कार-आसिफ इकबाल (रायपुर), जगत पाठक पुरस्कार-सुशील पाण्डेय, सुरेश खरे पुरस्कार - कृष्णमोहन झा, आरोग्य सुधा पुरस्कार - पुष्पेन्द्र सिंह तथा होमई व्यारावाला पुरस्कार-होमेन्द्र सुन्दर देशमुख को प्रदान किया गया। पुरस्कार के तहत शाल, प्रशस्ति पत्र और कलम प्रदान की जाती है।

खबर खबरवालों की

■ संजय द्विवेदी

राणा यशवंत की घर वापसी

जाने-माने टीवी संपादक राणा यशवंत एक बार फिर से आईटीवी नेटवर्क के चैनल इंडिया न्यूज के प्रबंध संपादक बनाए गए हैं। इसके पहले भी वे इस चैनल के प्रबंध संपादक (कार्यक्रम) रह चुके हैं। अप्रैल 2019 में वे चैनल से अलग हो गए थे और अपने नए वेंचर यूट्यूब चैनल 'द फ्रंट' में बतौर संपादक जिम्मेदारी सँभाल रहे थे। टीवी की दुनिया और खबरों की गहरी समझ रखने वाले राणा यशवंत कई महत्वपूर्ण चैनलों में प्रमुख पदों पर रह चुके हैं। इनमें 'जी न्यूज', 'आजतक', 'महुआ' और 'इंडिया न्यूज' जैसे चैनल शामिल हैं। उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उनके लोकप्रिय टीवी कार्यक्रम 'अर्धसत्य' के लिए उन्हें रेड इंक अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। साल 2012 में उन्हें राजीव गांधी ग्लोबल एक्सिलेंस अवॉर्ड मिल चुका है। वे साहित्य में भी रुचि रखते हैं। वर्ष 2016 में उनका काव्य संग्रह 'अंधेरी गली का चांद' छप चुका है।

डेक्कन क्रानिकल ने बंद किए दो संस्करण

अखबारों के प्रिंट संस्करणों के बंद होने की सूचनाओं के बीच दक्षिण भारत के प्रमुख अँगरेजी अखबार डेक्कन क्रानिकल ने अपने बेंगलुरु और केरल संस्करण बंद करने का फैसला लिया है। सन 1930 में स्थापित यह अखबार आज भी तमिलनाडु, आंध्र और तेलंगाना का प्रमुख अखबार बना हुआ है। बेंगलुरु और केरल के संस्करण बंद होने के बाद अब इसके 11 संस्करण बचे हुए हैं। मुंबई, कोलकाता और नई दिल्ली में यही कंपनी द एशिएन एज के नाम से अखबार निकालती है। इसके साथ ही लंदन से इसका आनलाइन संस्करण भी संचालित होता है। इसके पहले फरवरी 2019 में अपने आर्थिक अखबार फाइनेंशियल क्रानिकल के पाँच संस्करण बंद कर दिए थे। जिनमें मुंबई, बेंगलुरु, दिल्ली, चेन्नै और हैदराबाद के संस्करण शामिल थे।

रमाकांत चंदन सहारा, पटना के स्थानीय संपादक

वरिष्ठ पत्रकार रमाकांत चंदन राष्ट्रीय सहारा, पटना के स्थानीय संपादक नियुक्त किए गए हैं। बिहार में लखीसराय जनपद के मूल निवासी रमाकांत चंदन ढाई दशक से अधिक समय से सक्रिय पत्रकारिता कर रहे हैं। रमाकांत ने अपने पत्रकारी करियर की शुरुआत 'सहारा मीडिया' के साथ की थी। इसके पहले एमएससी करने के दौरान ही वे एनबीटी, दैनिक हिन्दुस्तान, सारिका और हंस पत्रिका समेत तमाम अखबारों के लिए लिखते थे। वे 24 वर्ष से सहारा मीडिया से जुड़कर काम कर रहे हैं। उनकी दो किताबें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रभाष झा लाइव हिंदुस्तान के संपादक होंगे

वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष झा अब दैनिक हिंदुस्तान की वेबसाइट 'लाइव हिंदुस्तान' के संपादक बनाए गए हैं। इसके पहले वे 'नवभारत टाइम्स'

(डिजिटल) में संपादक थे। मधुबनी के रहने वाले प्रभाष ने अनेक प्रमुख मीडिया संस्थानों के साथ काम किया है। जैन टीवी से पत्रकारिता का प्रारंभ करने के बाद वे नवभारत-भोपाल, दैनिक जागरण-मेरठ, अमर उजाला-देहरादून, बीबीसी न्यूज में काम करने के बाद नवभारत टाइम्स से जुड़े। तब से वे नवभारत टाइम्स में अनेक भूमिकाओं में काम करते रहे।

'ब्रॉडकास्टिंग कंटेंट कंप्लेंट्स काउंसिल' में तीन नए सदस्य

'इंडियन ब्रॉडकास्टिंग फाउंडेशन' ने डा. मीनाक्षी गोपीनाथ, पल्लवी जोशी और दीपा दीक्षित को 'ब्रॉडकास्टिंग कंटेंट कंप्लेंट्स काउंसिल' का नया सदस्य नियुक्त किया है। बोर्ड आफ डायरेक्टर्स की मीटिंग में यह निर्णय लिया गया। तीनों की नियुक्ति शर्मिला टैगोर, अरुंधति नाग और डा. इरा भास्कर की जगह की गई है, जिनका कार्यकाल समाप्त हो चुका है। आईबीएफ द्वारा स्थापित स्व-नियामक संस्था बीसीसीसी देश में टेलीविजन चैनलों द्वारा प्रसारित होने वाली सामग्री पर नजर रखती है। वर्ष 2011 में गठित इस कमेटी में शर्मिला टैगोर को विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में लिया गया है।

इस कमेटी की 89 से ज्यादा बैठकों में अब तक विभिन्न भारतीय भाषाओं और अँगरेजी में टीवी सामग्री से संबंधित हजारों शिकायतें सुनी जा चुकी हैं। 13 सदस्यीय इस कमेटी में तमिल सामग्री की विशेषज्ञ तारा मुरली विशेष आमंत्रित सदस्य हैं। इस कमेटी के अध्यक्ष उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश विक्रमजीत सेन हैं। सूचना प्रसारण मंत्रालय के पूर्व सचिव उदय कुमार वर्मा इस कमेटी के सदस्य हैं।

नए सदस्यों में डा. मीनाक्षी गोपीनाथ प्रतिष्ठित लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वूमैन की पूर्व प्राचार्य हैं। वर्ष 2007 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है। दूसरी सदस्य पल्लवी जोशी जानी-मानी अभिनेत्री हैं। लगभग चार दशक के अपने करियर में वह तमाम फिल्मों के साथ टीवी सीरियलों में भी काम कर चुकी हैं। वहीं दीपा दीक्षित राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य रह चुकी हैं।

संजॉय घोष मीडिया अवार्ड्स की घोषणा

दिल्ली स्थित एनजीओ 'चरखा विकास संचार नेटवर्क' ने 'संजॉय घोष मीडिया अवार्ड्स 2019' के लिए चयनित प्रतिभागियों के नामों की घोषणा कर दी है। इस संबंध में संस्था के मुख्य कार्यकारी मारियो नोरोन्हा ने बताया कि सभी प्रतिभागी देश के अलग अलग राज्यों से हैं। चयनित प्रतिभागियों में केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख़ से थेलिएस नोरबू, केंद्रशासित राज्य जम्मू और कश्मीर के सीमावर्ती जिला पुंछ से यूसुफ जमील, उत्तराखंड से नरेंद्र सिंह बिष्ट, राजस्थान से अमित बैजनाथ गर्ग और मेरठ की सुश्री शालू अग्रवाल शामिल हैं। प्रतिभागियों का चयन तीन सदस्यीय जूरी मेंबर्स द्वारा किया गया है। इसमें वरिष्ठ पत्रकार श्रीमती उषा राय, सुनीता भदौरिया और सुश्री प्रीति मेहरा शामिल थीं।

चयनित प्रतिभागियों को पचास पचास हजार रुपये और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाएँगे। चुने गए प्रतिभागियों को पाँच महीने में सामाजिक सरोकार से जुड़े अपने विषय से संबंधित पाँच आलेख लिखने होंगे। प्रतिभागियों को देश के दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों विशेषकर महिलाओं से जुड़ी समस्याएँ प्रमुखता से उजागर करनी होंगी, वहीं उनकी सफलताओं और आत्मनिर्भरता से जुड़ी कहानियों को भी कलमबंद करना होगा। इन अवॉर्ड्स के तहत उन पत्रकारों / लेखकों को मंच प्रदान किया जाएगा, जो ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं में छिपी ऐसी प्रतिभाओं को उजागर

करने का हौसला रखते हैं जो मीडिया की नजरों से अब तक दूर रही है। अवॉर्ड का उद्देश्य क्षेत्रीय भाषा के प्रकाशनों, छोटे शहरों के पत्रकारों और लेखन में रुचि रखने वालों को प्रोत्साहित करना है।

पत्रकारों का सृजन संसार

अखिलेश मयंक की 'लखनऊ डोमिनियर्स'

पत्रकार अखिलेश मयंक उत्तरप्रदेश की पत्रकारिता में एक जाना पहचाना नाम हैं। हाल में ही उनका उपन्यास 'लखनऊ डोमिनियर्स' छपकर आया है। उनकी योजना इस उपन्यास को चार हिस्सों में लिखने की है। यह उसका पहला भाग है। इस उपन्यास में लखनऊ की छवियाँ हैं। यह दरअसल लखनऊ के कुछ युवाओं की कहानी है जो अपने दम पर कुछ करना चाहते हैं। नए और बदलते हुए लखनऊ पर लिखा गया यह उपन्यास लेखक के दावे के अनुसार अपने परिवेश की कहानी सरीखा ही है।

अरुण तिवारी की 'अपनी बात'

भोपाल से छपने वाली प्रेरणा पत्रिका के संपादक अरुण तिवारी के संपादकीय आलेखों का संकलन 'अपनी बात' के नाम से छपकर आया है। प्रेरणा क्योंकि साहित्य पर केंद्रित पत्रिका है इसलिए इसके संपादकीय भी मूलत: साहित्यिक विमर्शों पर केंद्रित रहे हैं। किंतु संपादक ने अन्य समसामयिक विषयों को भी अपनी चिंताओं का केंद्र बनाया है। इसके चलते किताब सामान्य पाठकों के लिए भी विमर्श बिंदु उपलब्ध कराती है। एक सजग संपादक कैसे साहित्य के साथ अन्य सामाजिक सवालों पर संवाद करता है, इसे इस पुस्तक को पढ़ते समय महसूस किया जा सकता है। पुस्तक में कुल उनचालीस लेख संकलित हैं।

स्मृति शेष

त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी

'साहित्य अमृत' पत्रिका के संपादक पद्म विभूषण से सम्मानित कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी का 5 जनवरी को निधन हो गया। उन्होंने दिल्ली स्थित आवास पर अंतिम साँस ली। श्री चतुर्वेदी मूल रूप से कन्नौज के तिर्वा कस्बा के रहने वाले थे। आईएएस अधिकारी रहे टीएन चतुर्वेदी 1984 से 1989 तक भारत सरकार के महालेखाकार भी रहे। उनका जन्म तिर्वा में 18 जनवरी 1929 को हुआ था। वे राज्यसभा के सांसद भी रहे हैं। सन 2002 से 2007 के बीच टीएन चतुर्वेदी कर्नाटक के राज्यपाल भी रहे हैं।

अश्विनी कुमार चोपड़ा

पूर्व सांसद और पंजाब केसरी अखबार के संपादक अश्विनी कुमार चोपड़ा का लंबी बीमारी के बाद 18 जनवरी को निधन हो गया। वे कैंसर से पीड़ित थे। 63 वर्षीय अश्विनी ने गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में आखिरी साँस ली। उन्हें 6 जनवरी को मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सन 2014 में करनाल से बीजेपी के टिकट पर अश्विनी चुनावी मैदान में उतरे और सांसद चुने गए। वे अपने तीखे संपादकीय लेखन के लिए पहचान रखते थे।

अरविंद शुक्ल

उत्तरप्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार तथा स्पूतनिक समाचार पत्र के संपादक, लखनऊ निवासी श्री अरविंद शुक्ल 57 वर्ष का 18 जनवरी को रायपुर (छत्तीसगढ़) में निधन हो गया। उनका शव विमान द्वारा लखनऊ लाया गया। वे एक समारोह में शामिल होने रायपुर गए थे।

हफीज नोमानी

लखनऊ में उर्दू के जाने-माने पत्रकार हफीज नोमानी का 8 दिसंबर को निधन हो गया। वे 90 वर्ष के थे। उन्होंने जिंदगी के करीब साठ साल उर्दू पत्रकारिता की सेवा की।

(Email : 123dwivedi@gmail.com)

जिन्हें 'आंचलिक पत्रकार' डाक से नहीं मिल रहा है वे www.anchalikpatrakar.com पर यह पत्रिका पढ़ सकते हैं

1. 'आंचलिक पत्रकार' के कई पाठकों ने डाक से नियमित रूप से पत्रिका प्राप्त नहीं होने की शिकायत की है। हर महीने की 15 तारीख को पत्रिका पोस्ट कर दी जाती है।

2. आजीवन सदस्यता की सुविधा समाप्त है। जिन पाठकों को 'आंचलिक पत्रकार' जारी रखना है वे वार्षिक शुल्क ₹ 250/- भेजकर पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं।

3. 'आंचलिक पत्रकार' वेबसाइट www.anchalikpatrakar.com पर पढ़ा जा सकता है। इसके लिए कोई शुल्क नहीं देना होगा।

जिन विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और अन्य अध्ययन केन्द्रों में पत्रकारिता और जनसंचार की पढ़ाई होती है उनसे आग्रह है कि अपने विद्यार्थियों को

www.anchalikpatrakar.com

पर 'आंचलिक पत्रकार' का निःशुल्क लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें।

पत्रिका का शुल्क बैंक के माध्यम से खाते में भेजा जा सकता है

खाते का नाम - माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल

बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक
पंचानन भवन (तात्या टोपे नगर)
भोपाल

खाता संख्या - 53023547839

IFSC - SBIN0030005

सप्रे संग्रहालय, भोपाल
मोबाइल - 09425011467
ईमेल - sapresangrahalaya@yahoo.com

ज्ञानतीर्थ सप्रे संग्रहालय

यूट्यूब पर प्रोफे. कृपाशंकर चौबे की डाक्यूमेंट्री

भोपाल के माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान पर वरिष्ठ पत्रकार तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के अध्यक्ष और मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रोफे. कृपाशंकर चौबे ने वृत्तचित्र (डाक्यूमेंट्री) का निर्माण किया है। इसका शीर्षक है- 'ज्ञानतीर्थ सप्रे संग्रहालय'। यह वृत्तचित्र यूट्यूब पर उपलब्ध है। इसके अलावा, इस डाक्यूमेंट्री को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर मीडिया गैलरी में भी देखा जा सकता है।

वृत्तचित्र में विजयदत्त श्रीधर द्वारा सप्रे संग्रहालय की स्थापना से लेकर उसके अद्यतन विकास और वैशिष्ट्य को रेखांकित किया गया है। इसमें सर्वश्री शंभुदयाल गुरु, रमेशचंद्र शाह, प्रभाष जोशी, राजेंद्र माथुर, अच्युतानंद मिश्र, रामबहादुर राय, राहुल देव, हरिवंश, गिरीश्वर मिश्र, जगदीश उपासने, पुष्पेंद्रपाल सिंह प्रभृति विद्वानों की प्रतिक्रियाएँ दर्ज हैं।

वृत्तचित्र में सिनेमेटोग्राफी नरेंद्र कुशवाहा, दयानंद कुम्हरे, मिथिलेश राय और उमेश शर्मा की है। वायस ओवर डा. तारा दूगड़ की है। संपादन हेमंत दुबे ने किया है। पटकथा, निर्माण एवं निर्देशन कृपाशंकर चौबे का है। गौरीशंकर रैणा, संदीप कुमार दुबे और श्रुति अवस्थी ने निर्माण में सहयोग किया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक विजयदत्त श्रीधर द्वारा दृष्टि आफसेट, भोपाल से मुद्रित तथा माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल (म.प्र.) 462 003 से प्रकाशित। संपादक : विजयदत्त श्रीधर